اٰیاتها ١١١ | ١٧ سُورَةُ بَنِیْٓ اِسْرَآءِيْل مَكِّيَّةٌ ٥٠ | رکوعاتها ١٢

सूरए बनी इसराईल मक्किय्या है, इस में 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ

पाकी है उसे[2] जो रातों रात अपने बन्दे[3] को ले गया[4] मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे

الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ

अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) तक[5] जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी[6] कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता

1 : सूरए बनी इसराईल इस का नाम सूरए असरा और सूरए सुब्ह़ान भी है, येह सूरत मक्किय्या है मगर आठ आयतें "وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ" से "نَصِيْرًا" तक, येह क़ौल क़तादा का है। बैज़ावी ने जज़्म किया है कि येह सूरत तमाम की तमाम मक्किय्या है। इस सूरत में बारह रुकूअ़ और एक सो दस आयतें बसरी हैं और कूफ़ी एक सो ग्यारह और पांच सो तैंतीस कलिमे और तीन हज़ार चार सो साठ ह़र्फ़ हैं। **2 :** मुनज़्ज़ा (पाक) है उस की ज़ात हर ऐब व नक़्स से। **3 :** मह़बूब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **4 :** शबे मे'राज **5 :** जिस का फ़ासिला चालीस मन्ज़िल या'नी सवा महीने से ज़ियादा की राह है। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم शबे मे'राज दरजाते आ़लिया व मरातिबे रफ़ीआ़ (बुलन्द तरीन मर्तबों) पर फ़ाइज़ हुए तो रब عَزَّوَجَلَّ ने ख़िताब फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) येह फ़ज़ीलत व शरफ़ मैं ने तुम्हें क्यूं अ़ता फ़रमाया ? हुज़ूर ने अ़र्ज़ किया : इस लिये कि तू ने मुझे अ़ब्दिय्यत के साथ अपनी त़रफ़ मन्सूब फ़रमाया, इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई। (خازن) **6 :** दीनी भी दुन्यवी भी कि वोह सर ज़मीने पाक, वह़्य की जाए नुज़ूल और अम्बिया की इ़बादत गाह और उन का जाए क़ियाम व क़िब्लए इ़बादत है और कस्रते अन्हार व अश्जार (दरियाओं और दरख़्तों की कसरत) से वोह ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब और मेवों और फलों की कसरत से बेहतरीन ऐशो राह़त का मक़ाम है। मे'राज शरीफ़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का एक जलील मो'जिज़ा और **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मत है और इस से हुज़ूर का वोह कमाले क़ुर्ब ज़ाहिर होता है जो मख़्लूक़े इलाही में आप के सिवा किसी को मुयस्सर नहीं, नुबुव्वत के बारहवें साल सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मे'राज से नवाज़े गए, महीने में इख़्तिलाफ़ है मगर अश्हर (ज़ियादा मश्हूर) येह है कि सत्ताईसवीं रजब को मे'राज हुई। मक्कए मुकर्रमा से हुज़ूरे पुरनूर का बैतुल मक़्दिस तक शब के छोटे हिस्से में तशरीफ़ ले जाना नस्से क़ुरआनी से साबित है इस का मुन्किर काफ़िर है और आस्मानों की सैर और मनाज़िले क़ुर्ब में पहुंचना अह़ादीसे सह़ीह़ा मो'तमदा मश्हूरा से साबित है जो ह़द्दे तवातुर के क़रीब पहुंच गई हैं, इस का मुन्किर गुमराह है। मे'राज शरीफ़ ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ दोनों के साथ वाक़ेअ़ हुई, येही जुम्हूर अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है और अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की कसीर जमाअ़तें और हुज़ूर के अजल्ला अस्ह़ाब (जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम) इसी के मो'तक़िद हैं, नुसूसे आयात व अह़ादीस से भी येही मुस्तफ़ाद होता है। तीरह दिमाग़ाने फ़ल्सफ़ा (बे वुक़ूफ़ फ़ल्सफ़ियों) के अवहामे फ़ासिदा (फ़ासिद ख़यालात व गुमान) मह़ज़ बात़िल हैं, क़ुदरते इलाही के मो'तक़िद (पुख़्ता यक़ीन रखने वाले) के सामने वोह तमाम शुबुहात मह़ज़ बे ह़क़ीक़त हैं। ह़ज़रते जिब्रील का बुराक़ ले कर ह़ाज़िर होना, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ग़ायत (इन्तिहाई) इक्राम व एह़तिराम के साथ सुवार कर के ले जाना, बैतुल मक़्दिस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का अम्बिया की इमामत फ़रमाना, फिर वहां से सैरे समावात (आस्मानों की सैर) की त़रफ़ मुतवज्जेह होना, जिब्रीले अमीन का हर हर आस्मान के दरवाज़े खुलवाना, हर हर आस्मान पर वहां के साह़िबे मक़ाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का शरफ़े ज़ियारत से मुशर्रफ़ होना और हुज़ूर की तक्रीम करना, एह़तिराम बजा लाना, तशरीफ़ आवरी की मुबारक बादें देना, हुज़ूर का एक आस्मान से दूसरे आस्मान की त़रफ़ सैर फ़रमाना, वहां के अ़जाइब देखना और तमाम मुक़र्रबीन की निहायते मनाज़िल (मनाज़िल की इन्तिहा) **"सिद्रतुल मुन्तहा"** को पहुंचना जहां से आगे बढ़ने की किसी मलके मुक़र्रब को भी मजाल नहीं है, जिब्रीले अमीन का वहां मा'ज़िरत कर के रह जाना, फिर मक़ामे क़ुर्बे ख़ास में हुज़ूर का तरक़्क़ियां फ़रमाना और उस क़ुर्बे आ'ला में पहुंचना कि जिस के तसव्वुर तक ख़ल्क़ के अवहाम व अफ़्कार (फ़िक्रो ख़याल) भी परवाज़ से आ़जिज़ हैं, वहां मूरिदे रह़मतो करम होना और इन्आ़माते इलाहिय्यह और ख़सासे निअ़म (ख़ुसूसी ने'मतों) से सरफ़राज़ फ़रमाया जाना और मलकूते समावात व अर्ज़ और उन से अफ़्ज़लो बरतर उ़लूम पाना और उम्मत के लिये नमाज़ें फ़र्ज़ होना, हुज़ूर का शफ़ाअ़त फ़रमाना, जन्नत व दोज़ख़ की सैरें और फिर अपनी जगह वापस तशरीफ़ लाना और इस वाक़िए की ख़बरें देना, कुफ़्फ़ार का इस पर शोरिशें मचाना और बैतुल मक़्दिस की इमारत का ह़ाल और मुल्के शाम जाने वाले क़ाफ़िलों की कैफ़िय्यतें हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दरयाफ़्त करना, हुज़ूर का सब कुछ बताना और क़ाफ़िलों के जो अह़्वाल हुज़ूर ने बताए क़ाफ़िलों के आने पर उन

www.dawateislami.net

الْبَصِیْرُ ① وَ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ

देखता है और हम ने मूसा को किताब[7] अ़ता फ़रमाई और उसे बनी इसराईल के लिये हिदायत किया

اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِیْ وَكِیْلًا ② ؕ ذُرِّیَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ

कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ (काम बनाने वाला) न ठहराओ ऐ उन की औलाद जिन को हम ने नूह़ के साथ[8] सुवार किया बेशक वोह

كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③ وَ قَضَیْنَآ اِلٰى بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ فِی الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ

बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था[9] और हम ने बनी इसराईल को किताब[10] में वह्य भेजी कि ज़रूर तुम ज़मीन में

فِی الْاَرْضِ مَرَّتَیْنِ وَ لَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِیْرًا ④ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا

दो बार फ़साद मचाओगे[11] और ज़रूर बड़ा ग़ुरूर करोगे[12] फिर जब उन में पहली बार[13] का वा'दा आया[14]

بَعَثْنَا عَلَیْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ

हम ने तुम पर अपने कुछ बन्दे भेजे सख़्त लड़ाई वाले[15] तो वोह शहरों के अन्दर तुम्हारी तलाश को घुसे[16]

وَ كَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ⑤ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَیْهِمْ وَ اَمْدَدْنٰكُمْ

और येह एक वा'दा था[17] जिसे पूरा होना फिर हम ने उन पर उलट कर तुम्हारा ह़म्ला कर दिया[18] और तुम को

بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِیْنَ وَ جَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِیْرًا ⑥ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ

मालों और बेटों से मदद दी और तुम्हारा जत्था बढ़ा दिया अगर तुम भलाई करोगे

لِاَنْفُسِكُمْ ۫ وَ اِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِیَسُوْٓءٗا

अपना भला करोगे[19] और बुरा करोगे तो अपना फिर जब दूसरी बार का वा'दा आया[20] कि दुश्मन

की तस्दीक़ होना, येह तमाम सिहाह़ की मो'तबर अह़ादीस से साबित है और ब कसरत अह़ादीस इन तमाम उमूर के बयान और इन की तफ़ासील से मम्लू (भरी हुई) हैं। **7 :** या'नी तौरैत **8 :** कश्ती में **9 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام कसीरुश्शुक्र (बहुत ज़ियादा शुक्र करने वाले) थे, जब कुछ खाते पीते पहनते तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करते और उस का शुक्र बजा लाते और उन की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) पर लाज़िम है कि वोह अपने जद्दे मोह़तरम के त़रीक़े पर क़ाइम रहे। **10 :** तौरैत **11 :** इस से ज़मीने शाम व बैतुल मक़्दिस मुराद है और दो मरतबा के फ़साद का बयान अगली आयत में आता है। **12 :** और ज़ुल्मो बग़ावत में मुब्तला होगे। **13 :** के फ़साद के अ़ज़ाब **14 :** और उन्हों ने अह़कामे तौरैत की मुख़ालफ़त की और महारिम व मआ़सी (ह़राम व गुनाह) का इरतिकाब किया और ह़ज़रते शा'या पैग़म्बर عَلَیْهِ السَّلَام (व बक़ौले) (और दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़) ह़ज़रते अरमिया को क़त्ल किया। (बैज़ावी वग़ैरह) **15 :** बहुत ज़ोर व क़ुव्वत वाले, उन को तुम पर मुसल्लत़ किया और वोह सिन्नाचारीब और उस की अफ़्वाज हैं या बुख़्ते नसर या जालूत जिन्हों ने बनी इसराईल के उ़लमा को क़त्ल किया, तौरैत को जलाया, मस्जिद को ख़राब किया और सत्तर हज़ार को उन में से गिरिफ़्तार किया। **16 :** कि तुम्हें लूटें और क़त्ल व क़ैद करें। **17 :** अ़ज़ाब का कि लाज़िम था। **18 :** जब तुम ने तौबा की और तकब्बुर व फ़साद से बाज़ आए तो हम ने तुम को दौलत दी और उन पर ग़लबा इनायत फ़रमाया जो तुम पर मुसल्लत़ हो चुके थे। **19 :** तुम्हें उस भलाई की जज़ा मिलेगी। **20 :** और तुम ने फिर फ़साद बरपा किया, ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام के क़त्ल के दरपै हुए, **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें बचाया और अपनी त़रफ़ उठा लिया और तुम ने ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह्या عَلَیْهِمُ السَّلَام को क़त्ल किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम पर अहले फ़ारस और रूम को मुसल्लत़ किया कि तुम्हारे वोह दुश्मन तुम्हें क़त्ल करें, क़ैद करें और तुम्हें इतना परेशान करें

www.dawateislami.net

وُجُوْهَكُمْ وَ لِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ لِيُتَبِّرُوْا

तुम्हारा मुंह बिगाड़ दें[21] और मस्जिद में दाख़िल हों[22] जैसे पहली बार दाख़िल हुए थे[23] और जिस चीज़ पर क़ाबू

مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ۝٧ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَ اِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وقف لازم

पाएं[24] तबाह कर के बरबाद कर दें क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे[25] और अगर तुम फिर शरारत करो[26] तो हम फिर अ़ज़ाब करेंगे[27]

وَ جَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝٨ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ

और हम ने जहन्नम को काफ़िरों का क़ैदख़ाना बनाया है बेशक येह क़ुरआन वोह राह दिखाता है जो

اَقْوَمُ وَ يُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا

सब से सीधी है[28] और ख़ुशी सुनाता है ईमान वालों को जो अच्छे काम करें कि उन के लिये बड़ा

كَبِيْرًا ۝٩ وَّ اَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا

सवाब है और येह कि जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार

اَلِيْمًا ۙ۝١٠ وَ يَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ ع

कर रखा है और आदमी बुराई की दुआ करता है[29] जैसे भलाई मांगता है[30] और आदमी बड़ा

عَجُوْلًا ۝١١ وَ جَعَلْنَا الَّيْلَ وَ النَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَ جَعَلْنَآ

जल्द बाज़ है[31] और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया[32] तो रात की निशानी मिटी हुई रखी[33] और दिन की

اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

निशानी दिखाने वाली की[34] कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो[35] और[36] बरसों की गिनती और

21 : कि रन्जो परेशानी के आसार तुम्हारे चेहरों से ज़ाहिर हों **22 :** या'नी बैतुल मक़्दिस में और उस को वीरान करें **23 :** और उस को वीरान किया था तुम्हारे पहले फ़साद के वक़्त **24 :** बिलादे बनी इसराईल से उस को **25 :** दूसरी मरतबा के बा'द भी अगर तुम दोबारा तौबा करो और मआ़सी से बाज़ आओ। **26 :** तीसरी मरतबा। **27 :** चुनान्चे ऐसा हुवा और उन्हों ने फिर अपनी शरारत की तरफ़ औ़द किया (पलटे) और ज़मानए पाके मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم में हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की तक्ज़ीब की तो क़ियामत तक के लिये उन पर ज़िल्लत लाज़िम कर दी गई और मुसल्मान उन पर मुसल्लत फ़रमा दिये गए जैसा कि क़ुरआने करीम में यहूद की निस्बत वारिद हुवा : "ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ" الآیہ। **28 :** वोह **अल्लाह** तआ़ला की तौहीद और उस के रसूलों पर ईमान लाना और उन की इताअ़त करना है। **29 :** अपने लिये और अपने घर वालों के लिये और अपने माल के लिये और अपनी औलाद के लिये और ग़ुस्से में आ कर उन सब को कोसता है और उन के लिये बद दुआएं करता है। **30 :** अगर **अल्लाह** तआ़ला उस की येह बद दुआ क़बूल कर ले तो वोह शख़्स या उस के अहलो माल हलाक हो जाएं लेकिन **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से उस को क़बूल नहीं फ़रमाता। **31 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में इन्सान से काफ़िर मुराद है और बुराई की दुआ से उस का अ़ज़ाब की जल्दी करना और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि नज़्र बिन हारिस काफ़िर ने कहा : या रब ! अगर येह दीने इस्लाम तेरे नज़्दीक हक़ है तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा या दर्दनाक अ़ज़ाब भेज **अल्लाह** तआ़ला ने उस की येह दुआ क़बूल कर ली और उस की गरदन मारी गई। **32 :** अपनी वहदानिय्यत व क़ुदरत पर दलालत करने वाली **33 :** या'नी शब को तारीक किया ताकि उस में आराम किया जाए। **34 :** रोशन कि उस में सब चीज़ें नज़र आएं। **35 :** और कस्बो मआ़श के काम ब आसानी अन्जाम दे सको। **36 :** रात दिन के दौरे से

www.dawateislami.net

وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَیْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِیْلًا ﴿۱۲﴾ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓىِٕرَهٗ

हिसाब जानो[37] और हम ने हर चीज़ ख़ूब जुदा जुदा ज़ाहिर फ़रमा दी[38] और हर इन्सान की क़िस्मत हम ने उस के

فِیْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾ اِقْرَاْ

गले से लगा दी है[39] और उस के लिये क़ियामत के दिन एक नविश्ता (तहरीर) निकालेंगे जिसे खुला हुवा पाएगा[40] फ़रमाया जाएगा कि अपना

كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًا ﴿۱۴﴾ ؕ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا

नामा (आ'माल) पढ़ आज तू ख़ुद ही अपना हिसाब करने को बहुत है जो राह पर आया वोह

یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ

अपने ही भले को राह पर आया[41] और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका[42] और कोई बोझ उठाने वाली जान

وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِیْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ وَاِذَآ

दूसरे का बोझ न उठाएगी[43] और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें[44] और जब

اَرَدْنَاۤ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْیَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِیْهَا فَفَسَقُوْا فِیْهَا فَحَقَّ عَلَیْهَا

हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं उस के ख़ुशहालों (अमीरों)[45] पर अह़काम भेजते हैं फिर वोह उस में बे हुक्मी करते हैं तो उस पर

الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِیْرًا ﴿۱۶﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ

बात पूरी हो जाती है तो हम उसे तबाह कर के बरबाद कर देते हैं और हम ने कितनी ही संगतें (क़ौमें)[46] नूह़ के बा'द हलाक

نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا ﴿۱۷﴾ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ

कर दीं[47] और तुम्हारा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बरदार देखने वाला[48] जो येह जल्दी वाली

الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِیْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِیْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ

चाहे[49] हम उसे उस में जल्द दे दें जो चाहें जिसे चाहें[50] फिर उस के लिये जहन्नम कर दें

37 : दीनी व दुन्यवी कामों के अवक़ात का। **38 :** ख़्वाह उस की ह़ाजत दीन में हो या दुन्या में। मुद्दआ येह है कि हर एक चीज़ की तफ़्सील फ़रमा दी जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया "مَافَرَّطْنَا فِی الْكِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ" हम ने किताब में कुछ छोड़ न दिया और एक और आयत में इर्शाद किया "وَنَزَّلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ تِبْیَانًا لِّكُلِّ شَیْءٍ" ग़रज़ इन आयात से साबित है कि क़ुरआने करीम में जमीअ़ अश्या का बयान है। "سُبْحٰنَ اللّٰه" क्या किताब है ! कैसी इस की जामिइय्यत ! (جمل، خازن، مدارک وغیرہ) **39 :** या'नी जो कुछ उस के लिये मुक़द्दर किया गया है ख़ैर या शर, सआ़दत या शक़ावत वोह उस को इस त़रह़ लाज़िम है जैसे गले का हार जहां जाए साथ रहे कभी जुदा न हो। मुजाहिद ने कहा कि हर इन्सान के गले में उस की सआ़दत या शक़ावत का नविश्ता (लिखा हुवा) डाल दिया जाता है। **40 :** वोह उस का आ'माल नामा होगा। **41 :** उस का सवाब वोही पाएगा। **42 :** उस के बहक्ने का गुनाह और वबाल उस पर **43 :** हर एक के गुनाहों का बार उसी पर होगा। **44 :** जो उम्मत को उस के फ़राइज़ से आगाह फ़रमाए और राहे ह़क़ उन पर वाज़ेह़ करे और ह़ुज्जत क़ाइम फ़रमाए।

www.dawateislami.net

يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا

कि उस में जाए मज़म्मत किया हुवा धक्के खाता और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे[51]

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَ

और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी[52] हम सब को मदद देते हैं इन को भी[53] और

هٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾ اُنْظُرْ

उन को भी[54] तुम्हारे रब की अ़ता से[55] और तुम्हारे रब की अ़ता पर रोक नहीं[56] देखो

كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ

हम ने उन में एक को एक पर कैसी बड़ाई दी[57] और बेशक आख़िरत दरजों में सब से बड़ी और फ़ज़्ल में सब

ع ٢ ١٢ ٢ تَفْضِيْلًا ﴿٢١﴾ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿٢٢﴾

से आ'ला ऐ सुनने वाले अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया जाता बेकस[58]

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ

और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने

عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَ

उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं[59] तो उन से हूं (उफ़ तक) न कहना[60] और उन्हें न झिड़कना और

45 : और सरदारों **46 :** या'नी तक्ज़ीब करने वाली उम्मतें **47 :** मिस्ल आ़द व समूद वग़ैरा के। **48 :** ज़ाहिर व बातिन का आ़लिम, उस से कुछ छुपाया नहीं जा सकता। **49 :** या'नी दुन्या का त़लब गार हो। **50 :** येह ज़रूरी नहीं कि त़ालिबे दुन्या की हर ख़्वाहिश पूरी की जाए और उसे दिया ही जाए और जो वोह मांगे वोही दिया जाए, ऐसा नहीं है, बल्कि उन में से जिसे चाहते हैं देते हैं और जो चाहते हैं देते हैं, कभी ऐसा होता है कि महरूम कर देते हैं और कभी ऐसा होता है कि वोह बहुत चाहता है और थोड़ा देते हैं, कभी ऐसा कि ऐ़श चाहता है तक्लीफ़ देते हैं, इन ह़ालतों में काफ़िर दुन्या व आख़िरत दोनों के टोटे (नुक़्सान) में रहा और अगर दुन्या में उस को उस की पूरी मुराद दे दी गई तो आख़िरत की बद नसीबी व शक़ावत जब भी है, ब ख़िलाफ़ मोमिन के जो आख़िरत का त़लब गार है अगर वोह दुन्या में फ़क़्र से भी बसर कर गया तो आख़िरत की दाइमी ने'मत उस के लिये है और अगर दुन्या में भी फ़ज़्ले इलाही से उस को ऐ़श मिला तो दोनों जहान में काम्याब, ग़रज़ मोमिन हर ह़ाल में काम्याब है और काफ़िर अगर दुन्या में आराम पा भी ले तो भी क्या ? क्यूं कि **51 :** और अ़मले सालेह़ बजा लाए **52 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अ़मल की मक़्बूलिय्यत के लिये तीन चीज़ें दरकार हैं : **एक** तो त़ालिबे आख़िरत होना या'नी निय्यत नेक। **दूसरे** सई या'नी अ़मल को ब एहतिमाम उस के हुक़ूक़ के साथ अदा करना। **तीसरी** ईमान जो सब से ज़ियादा ज़रूरी है। **53 :** जो दुन्या चाहते हैं **54 :** जो त़ालिबे आख़िरत हैं **55 :** दुन्या में सब को रोज़ी देते हैं और अन्जाम हर एक का उस के ह़स्बे ह़ाल। **56 :** दुन्या में सब उस से फ़ैज़ उठाते हैं नेक हों या बद। **57 :** माल व कमाल व जाह व सरवत में। **58 :** बे यारो मददगार। **59 :** ज़ो'फ़ का ग़लबा हो आ'ज़ा में क़ुव्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उन के पास बे त़ाक़त था ऐसे ही वोह आख़िर उ़म्र में तेरे पास नातुवां रह जाएं **60 :** या'नी ऐसा कोई कलिमा ज़बान से न निकालना जिस से येह समझा जाए कि उन की त़रफ़ से त़बीअ़त पर कुछ गिरानी (बोझ) है।

www.dawateislami.net

قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ

उन से ता'ज़ीम की बात कहना[61] और उन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा[62] नर्म दिली से और

قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ

अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (छोटी उ़म्र) में पाला[63] तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे

نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾ وَ

दिलों में है[64] अगर तुम लाइक़ हुए[65] तो बेशक वोह तौबा करने वालों को बख़्शने वाला है और

اٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ

रिश्तेदारों को उन का ह़क़ दे[66] और मिस्कीन और मुसाफ़िर को[67] और फ़ुज़ूल न उड़ा[68] बेशक

الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾

उड़ाने वाले (फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले) शैत़ानों के भाई हैं[69] और शैत़ान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है[70]

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا

और अगर तू उन से[71] मुंह फेरे अपने रब की रह़मत के इन्तिज़ार में जिस की तुझे उम्मीद है तो उन से आसान

61 : और हुस्ने अदब के साथ उन से ख़िताब करना। **मस्अला :** मां बाप को उन का नाम ले कर न पुकारे येह ख़िलाफ़े अदब है और इस में उन की दिल आज़ारी है लेकिन वोह सामने न हों तो उन का ज़िक्र नाम ले कर करना जाइज़ है। **मस्अला :** मां बाप से इस त़रह़ कलाम करे जैसे ग़ुलाम व ख़ादिम आक़ा से करता है। 62 : या'नी ब नरमी व तवाज़ोअ़ (आजिज़ी व इन्किसारी से) पेश आ और उन के साथ थके वक़्त (बुढ़ापे) में शफ़्क़त व मह़ब्बत का बरताव कर कि उन्हों ने तेरी मजबूरी के वक़्त (बचपन में) तुझे मह़ब्बत से परवरिश किया था और जो चीज़ उन्हें दरकार हो वोह उन पर ख़र्च करने में दरेग़ न कर। 63 : मुद्दआ़ येह है कि दुन्या में बेहतर सुलूक और ख़िदमत में कितना भी मुबालग़ा किया जाए लेकिन वालिदैन के एह़सान का ह़क़ अदा नहीं होता, इस लिये बन्दे को चाहिये कि बारगाहे इलाही में इन पर फ़ज़्लो रह़मत फ़रमाने की दुआ़ करे और अ़र्ज़ करे कि या रब ! मेरी ख़िदमतें इन के एह़सान की जज़ा नहीं हो सकतीं तू इन पर करम कर कि इन के एह़सान का बदला हो। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि मुसल्मान के लिये रह़मत व मग़्फ़िरत की दुआ़ जाइज़ और उसे फ़ाएदा पहुंचाने वाली है। मुर्दों के ईसाले सवाब में भी उन के लिये दुआ़ए रह़मत होती है लिहाज़ा उस के लिये येह आयत अस्ल है। **मस्अला :** वालिदैन काफ़िर हों तो उन के लिये हिदायत व ईमान की दुआ़ करे कि येही उन के ह़क़ में रह़मत है। ह़दीस शरीफ़ में है कि वालिदैन की रिज़ा में **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और उन की नाराज़ी में **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी है। दूसरी ह़दीस में है : वालिदैन का फ़रमां बरदार जहन्नमी न होगा और उन का ना फ़रमान कुछ भी अ़मल करे गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा। एक और ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वालिदैन की ना फ़रमानी से बचो इस लिये कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है और ना फ़रमान वोह ख़ुश्बू न पाएगा, न क़ाते़अ़ रेह़्म, न बूढ़ा ज़िनाकार, न तकब्बुर से अपनी इज़ार टख़्नों से नीचे लटकाने वाला। 64 : वालिदैन की इत़ाअ़त का इरादा और उन की ख़िदमत का ज़ौक़। 65 : और तुम से वालिदैन की ख़िदमत में तक़्सीर वाक़ेअ़ हुई तो तुम ने तौबा की। 66 : उन के साथ सिलए रेह़्मी कर और मह़ब्बत और मेलजोल और ख़बरगीरी और मौक़अ़ पर मदद और हुस्ने मुआ़शरत। **मस्अला :** और अगर वोह मह़ारिम में से हों और मोह़ताज हो जाएं तो उन का ख़र्च उठाना, येह भी उन का ह़क़ है और साह़िबे इस्तित़ाअ़त रिश्तेदार पर लाज़िम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा है कि रिश्तेदारों से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ क़राबत रखने वाले मुराद हैं और उन का ह़क़्क़े ख़ुमुस देना और उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर बजा लाना है। 67 : उन का ह़क़ दो या'नी ज़कात। 68 : या'नी ना जाइज़ काम में ख़र्च न कर। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि "تَبْذِیر" माल का नाह़क़ में ख़र्च करना है। 69 : कि उन की राह चलते हैं। 70 : तो उस की राह इख़्तियार करना न चाहिये। 71 : या'नी रिश्तेदारों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मिह्जअ़ व बिलाल व सुहैब व सालिम व ख़ब्बाब

www.dawateislami.net

مَّيْسُوْرًا ﴿۲۸﴾ وَ لَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَ لَا تَبْسُطْهَا كُلَّ

बात कह[72] और अपना हाथ अपनी गरदन से बंधा हुवा न रख और न पूरा

الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुवा थका हुवा[73] बेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़्क़ कुशादा

٣ ع٨ ٣ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۳۰﴾ ع وَ لَا تَقْتُلُوْۤا

देता और[74] कस्ता है (तंगी देता है) बेशक वोह अपने बन्दों को खूब जानता[75] देखता है और अपनी औलाद

اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَ اِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ

को क़त्ल न करो मुफ़्लिसी के डर से[76] हम तुम्हें भी और उन्हें भी रोज़ी देंगे बेशक उन का क़त्ल

خِطْاً كَبِيْرًا ﴿۳۱﴾ وَ لَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَ سَآءَ

बड़ी ख़ता है और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे हयाई है और बहुत ही बुरी

سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾ وَ لَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَ مَنْ قُتِلَ

राह और कोई जान जिस की हुरमत **अल्लाह** ने रखी है नाहक़ न मारो और जो नाहक़

مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

मारा जाए तो बेशक हम ने उस के वारिस को क़ाबू दिया है[77] तो वोह क़त्ल में हद से न बढ़े[78] ज़रूर उस की

अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में नाज़िल हुई जो वक़्तन फ़ वक़्तन सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अपने हवाइज (हाजात) व ज़रूरिय्यात के लिये सुवाल करते रहते थे, अगर किसी वक़्त हुज़ूर के पास कुछ न होता तो आप "हयाअन" उन से ए'राज़ करते और ख़ामोश हो जाते ब ईं इन्तिज़ार कि **अल्लाह** तआला कुछ भेजे तो उन्हें अता फ़रमाएं। **72 :** या'नी उन की खुशदिली के लिये उन से वा'दा कीजिये या उन के हक़ में दुआ फ़रमाइये। **73 :** येह तम्सील है जिस से इन्फ़ाक़ या'नी ख़र्च करने में ए'तिदाल मल्हूज़ रखने की हिदायत मन्ज़ूर है और येह बताया जाता है कि न तो इस तरह हाथ रोको कि बिल्कुल ख़र्च ही न करो और येह मा'लूम हो गोया कि हाथ गले से बांध दिया गया है देने के लिये हिल ही नहीं सकता, ऐसा करना तो सबबे मलामत होता है कि बख़ील कन्जूस को सब बुरा कहते हैं और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरिय्यात के लिये भी कुछ बाक़ी न रहे। **शाने नुज़ूल :** एक मुसल्मान बीबी के सामने एक यहूदिया ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की सख़ावत का बयान किया और इस में इस हद तक मुबालग़ा किया कि हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर तरजीह दे दी और कहा कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات की सख़ावत तो इस इन्तिहा पर पहुंची हुई थी कि अपनी ज़रूरिय्यात के इलावा जो कुछ भी उन के पास होता साइल को दे देने से दरेग़ न फ़रमाते, येह बात मुसल्मान बीबी को ना गवार गुज़री और उन्हों ने कहा कि अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام सब साहिबे फ़ज़्लो कमाल हैं, हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات के जूदो नवाल में कुछ शुबा नहीं, लेकिन सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का मर्तबा सब से आ'ला है और येह कह कर उन्हों ने चाहा कि यहूदिया को हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के जूदो करम की आज़्माइश करा दी जाए। चुनान्चे उन्हों ने अपनी छोटी बच्ची को हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات की ख़िदमत में भेजा कि हुज़ूर से क़मीस मांग लाए उस वक़्त हुज़ूर के पास एक ही क़मीस थी जो ज़ैबे तन थी वोही उतार कर अता फ़रमा दी और अपने आप दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ रखी शर्म से बाहर तशरीफ़ न लाए, यहां तक कि अज़ान का वक़्त आया अज़ान हुई, सहाबा ने इन्तिज़ार किया, हुज़ूर तशरीफ़ न लाए तो सब को फ़िक्र हुई, हाल मा'लूम करने के लिये दौलत सराए अक़्दस में हाज़िर हुए तो देखा कि जिस्मे मुबारक पर क़मीस नहीं है इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **74 :** जिसे चाहे उस के लिये तंगी करता और उस को **75 :** और उन के अहवाल व मसालेह को **76 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग अपनी लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करते थे और इस

مَنْصُوْرًا ﴿٣٣﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْیَتِیْمِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ حَتّٰى یَبْلُغَ

मदद होनी है[79] और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सब से भली है[80] यहां तक कि वोह अपनी

اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٤﴾ وَاَوْفُوا الْكَیْلَ

जवानी को पहुंचे[81] और अ़ह्द पूरा करो[82] बेशक अ़ह्द से सुवाल होना है और मापो तो

اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِیْمِ ؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِیْلًا ﴿٣٥﴾

पूरा मापो और बराबर तराज़ू से तोलो येह बेहतर है और इस का अन्जाम अच्छा

وَلَا تَقْفُ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ

और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं[83] बेशक कान और आंख और दिल इन सब

اُولٰٓىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٦﴾ وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ

से सुवाल होना है[84] और ज़मीन में इतराता न चल[85] बेशक तू हरगिज़

تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَیِّئُهٗ

ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा[86] येह जो कुछ गुज़रा इन में की बुरी बात

عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ مِمَّاۤ اَوْحٰۤى اِلَیْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ

तेरे रब को ना पसन्द है येह उन वह्यों में से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ़ भेजी हिक्मत की बातें[87]

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِیْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿٣٩﴾

और ऐ सुनने वाले **अल्लाह** के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू जहन्नम में फेंका जाएगा ता'ना पाता धक्के खाता

के कई सबब थे नादारी व मुफ़्लिसी का ख़ौफ़, लूट का ख़ौफ़, **अल्लाह** तआ़ला ने इस की मुमानअ़त फ़रमाई। **77 :** क़िसास लेने का। **मस्अला :** आयत से साबित हुवा कि क़िसास लेने का हक़ वली को है और वोह ब तरतीबे अ़सबात हैं। **मस्अला :** और जिस का वली न हो उस का वली सुल्तान है। **78 :** और ज़मानए जाहिलिय्यत की तरह एक मक़्तूल के इवज़ में कई कई को या बजाए क़ातिल के उस की क़ौम व जमाअ़त के और किसी शख़्स को क़त्ल न करे। **79 :** या'नी वली की या मक़्तूल मज़्लूम की या उस शख़्स की जिस को वली नाहक़ क़त्ल करे। **80 :** वोह येह है कि उस की हिफ़ाज़त करो और उस को बढ़ाओ। **81 :** और वोह अठ्ठारह साल की उ़म्र है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के नज़्दीक येही मुख़्तार है और ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़लामात ज़ाहिर न होने की ह़ालत में इन्तिहाए मुद्दते बुलूग़ इसी से तमस्सुक कर के अठ्ठारह साल क़रार दी। (احمدی) (अ़लामाते बुलूग़ ज़ाहिर न होने की सूरत में लड़का लड़की के लिये इन्तिहाई मुद्दते बुलूग़ 15 साल और अक़्ल मुद्दत लड़के के लिये 12 और लड़की के लिये 9 साल है, और इसी क़ौल पर फ़तवा है। "फ़तावा रज़विय्या, जि. 11, स. 560" मुलख़्ख़सन) **82 : अल्लाह** का भी बन्दों का भी। **83 :** या'नी जिस चीज़ को देखा न हो उसे येह न कहो कि मैं ने देखा, जिस को सुना न हो उस की निस्बत न कहो कि मैं ने सुना। इब्ने ह़नीफ़ा से मन्क़ूल है कि झूटी गवाही न दो। इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : किसी पर वोह इल्ज़ाम न लगाओ जो तुम न जानते हो। **84 :** कि तुम ने इन से क्या काम लिया ? **85 :** तकब्बुर व ख़ुदनुमाई से। **86 :** मा'ना येह हैं कि तकब्बुर व ख़ुदनुमाई से कुछ फ़ाएदा नहीं। **87 :** जिन की सिह्ह़त पर अ़क़्ल गवाही दे और उन से नफ़्स की इस्लाह़ हो उन की रिआ़यत लाज़िम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन आयात का ह़ासिल तौह़ीद और नेकियों और ता़अ़तों का हुक्म देना और दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की तरफ़ रग़बत दिलाना है।

www.dawateislami.net

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ

क्या तुम्हारे रब ने तुम को बेटे चुन दिये और अपने लिये फ़िरिश्तों से बेटियां बनाई[88] बेशक तुम

لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَ ع ١٠

बड़ा बोल बोलते हो[89] और बेशक हम ने इस क़ुरआन में त़रह़ त़रह़ से बयान फ़रमाया[90] कि वोह समझें[91] और

مَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۱﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا

इस से उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत[92] तुम फ़रमाओ अगर उस के साथ और ख़ुदा होते जैसा येह बकते हैं जब तो वोह

لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿۴۲﴾ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ

अ़र्श के मालिक की त़रफ़ कोई राह ढूंड निकालते[93] उसे पाकी और बरतरी उन की बातों से

عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿۴۳﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ

बड़ी बरतरी उस की पाकी बोलते हैं सातों आस्मान और ज़मीन और जो कोई इन में हैं[94]

وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ

और कोई चीज़ नहीं[95] जो उसे सराहती (ता'रीफ़ करती) हुई उस की पाकी न बोले[96] हां तुम उन की तस्बीह़ नहीं समझते[97] बेशक वोह

كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ

ह़िल्म वाला बख़्शने वाला है[98] और ऐ महबूब तुम ने क़ुरआन पढ़ा हम ने तुम पर और उन में कि

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह अठ्ठारह आयतें "لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ" से "مَدْحُوْرًا" तक ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अल्वाह़ में थीं, उन की इब्तिदा तौह़ीद के ह़ुक्म से हुई और इन्तिहा शिर्क की मुमानअ़त पर, इस से मा'लूम हुवा कि हर ह़िक्मत की अस्ल तौह़ीद व ईमान है और कोई क़ौल व अ़मल बिग़ैर इस के क़ाबिले पज़ीराई नहीं। **88 :** येह ख़िलाफ़े ह़िक्मत बात किस त़रह़ कहते हो। **89 :** कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये औलाद साबित करते हो जो ख़वासे अज्साम से है और **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक, फिर इस में भी अपनी बड़ाई रखते हो कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हो और उस के लिये बेटियां तज्वीज़ करते हो, कितनी बे अदबी और गुस्ताख़ी है। **90 :** दलीलों से भी, मिसालों से भी, ह़िक्मतों से भी, इ़ब्रतों से भी और जा बजा इस मज़मून को क़िस्म क़िस्म के पैरायों में बयान फ़रमाया। **91 :** और पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाले) हों। **92 :** और ह़क़ से दूरी। **93 :** और उस से बर सरे मुक़ाबला होते जैसा बादशाहों का त़रीक़ा है। **94 :** ज़बाने ह़ाल से, इस त़रह़ कि उन के वुजूद सानेअ़ की क़ुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करते हैं या ज़बाने क़ाल से और येही सह़ीह़ है, अह़ादीसे कसीरा इस पर दलालत करती हैं और सलफ़ से येही मन्क़ूल है। **95 :** जमाद व नबात व ह़ैवान से ज़िन्दा। **96 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : हर ज़िन्दा चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ करती है और हर चीज़ की ज़िन्दगी उस के ह़स्बे हैसिय्यत है। मुफ़स्सिरीन ने कहा कि दरवाज़ा खोलने की आवाज़ और छत का चटख़्ना येह भी तस्बीह़ करना है और इन सब की तस्बीह़ "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" है। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अंगुश्ते मुबारक से पानी के चश्मे जारी होते हम ने देखे और येह भी हम ने देखा कि खाते वक़्त में खाना तस्बीह़ करता था। (بخاری شریف) ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं उस पथ्थर को पहचानता हूं जो मेरी बि'सत के ज़माने में मुझे सलाम किया करता था। (مسلم شریف) इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم लकड़ी के एक सुतून से तक्या फ़रमा कर ख़ुत्बा फ़रमाया करते थे, जब मिम्बर बनाया गया और हुज़ूर मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुए तो वोह सुतून रोया, हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات ने उस पर दस्ते करम फेरा और शफ़्क़त फ़रमाई और तस्कीन दी। (بخاری شریف) इन तमाम अह़ादीस से जमाद का कलाम और तस्बीह़ करना साबित हुवा।

www.dawateislami.net

الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۙ﴿۴۵﴾ وَّ جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुवा पर्दा कर दिया[99] और हम ने उन के दिलों पर

اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِی الْقُرْاٰنِ

ग़िलाफ़ डाल दिये हैं कि इसे न समझें और उन के कानों में टेंट (रूई)[100] और जब तुम क़ुरआन में अपने अकेले रब की

وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿۴۶﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا یَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ

याद करते हो वोह पीठ फेर कर भागते हैं नफ़रत करते हम ख़ूब जानते हैं जिस लिये वोह सुनते हैं[101]

اِذْ یَسْتَمِعُوْنَ اِلَیْكَ وَ اِذْ هُمْ نَجْوٰۤى اِذْ یَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ

जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब आपस में मश्वरा करते हैं जब कि ज़ालिम कहते हैं तुम पीछे नहीं चले मगर एक ऐसे मर्द

اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۴۷﴾ اُنْظُرْ كَیْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا

के जिस पर जादू हुवा[102] देखो उन्हों ने तुम्हें कैसी तश्बीहें दीं तो गुमराह हुए कि

یَسْتَطِیْعُوْنَ سَبِیْلًا ﴿۴۸﴾ وَ قَالُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّ رُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ

राह नहीं पा सकते और बोले क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे क्या सचमुच

خَلْقًا جَدِیْدًا ﴿۴۹﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِیْدًا ۙ﴿۵۰﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا

नए बन कर उठेंगे[103] तुम फ़रमाओ कि पथ्थर या लोहा हो जाओ या और कोई मख़्लूक़ जो

یَكْبُرُ فِیْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَیَقُوْلُوْنَ مَنْ یُّعِیْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِیْ فَطَرَكُمْ

तुम्हारे ख़याल में बड़ी हो[104] तो अब कहेंगे हमें कौन फिर पैदा करेगा तुम फ़रमाओ वोही जिस ने तुम्हें

97 : इख़्तिलाफ़े लुग़ात के बाइस या दुश्वारिये इदराक के सबब **98 :** कि बन्दों की ग़फ़्लत पर अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। **99 :** कि वोह आप को देख न सकें। **शाने नुज़ूल :** जब आयत "تَبَّتْ یَدَا" नाज़िल हुई तो अबू लहब की औ़रत पथ्थर ले कर आई, हुज़ूर मअ़ हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तशरीफ़ रखते थे, उस ने हुज़ूर को न देखा और हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहने लगी तुम्हारे आक़ा कहां हैं ? मुझे मा'लूम हुवा है उन्हों ने मेरी हज्व की है। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : वोह शे'र गोई नहीं करते हैं। तो वोह येह कहती हुई वापस हुई कि मैं उन का सर कुचलने के लिये येह पथ्थर लाई थी। हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि उस ने हुज़ूर को देखा नहीं। फ़रमाया : मेरे और उस के दरमियान एक फ़िरिश्ता हाइल रहा, इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **100 :** गिरानी जिस के बाइस वोह क़ुरआन शरीफ़ नहीं सुनते। **101 :** या'नी सुनते भी हैं तो तमस्ख़ुर और तक्ज़ीब (मज़ाक़ और झुटलाने) के लिये। **102 :** तो बा'ज़ उन में से आप को मजनूं कहते हैं, बा'ज़ साहिर, बा'ज़ काहिन, बा'ज़ शाइ़र। **103 :** येह बात उन्हों ने बहुत तअ़ज्जुब से कही और मरने और ख़ाक में मिल जाने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को उन्हों ने बहुत बईद समझा, **अल्लाह** तआ़ला ने उन का रद किया और अपने हबीब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इर्शाद फ़रमाया : **104 :** और हयात से दूर हो, जान उस से कभी मुतअ़ल्लिक़ न हुई हो तो भी **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तुम्हें ज़िन्दा करेगा और पहली हालत की तरफ़ वापस फ़रमाएगा चे जाए कि हड्डियां और इस जिस्म के ज़र्रे, उन्हें ज़िन्दा करना उस की क़ुदरत से क्या बईद है, इन से तो जान पहले मुतअ़ल्लिक़ रह चुकी है।

www.dawateislami.net

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ

पहली बार पैदा किया था तो अब तुम्हारी तरफ़ मस्ख़रगी से सर हिला कर कहेंगे येह कब है[105] तुम फ़रमाओ

عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿۵۱﴾ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَ

शायद नज़्दीक ही हो जिस दिन वोह तुम्हें बुलाएगा[106] तो तुम उस की हम्द करते चले आओगे और[107]

تَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۵۲﴾ ع وَ قُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ ۵ ع ۵

समझोगे कि न रहे थे[108] मगर थोड़ा और मेरे[109] बन्दों से फ़रमाओ[110] वोह बात कहें जो सब से

اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا

अच्छी हो[111] बेशक शैतान उन के आपस में फ़साद डाल देता है बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन

مُّبِيْنًا ﴿۵۳﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ

है तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है वोह चाहे तो तुम पर रह्म करे[112] या चाहे तो तुम्हें अ़ज़ाब करे

وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۵۴﴾ وَ رَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ

और हम ने तुम को उन पर कड़ोड़ा (ज़िम्मेदार) बना कर न भेजा[113] और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आस्मानों और

الْاَرْضِ ؕ وَ لَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ

ज़मीन में हैं[114] और बेशक हम ने नबियों में एक को एक पर बड़ाई दी[115] और दावूद को ज़बूर

زَبُوْرًا ﴿۵۵﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ

अ़ता फ़रमाई[116] तुम फ़रमाओ पुकारो उन्हें जिन को अल्लाह के सिवा गुमान करते हो तो वोह इख़्तियार नहीं रखते तुम से

105 : या'नी क़ियामत कब क़ाइम होगी और मुर्दे कब उठाए जाएंगे ? **106 :** क़ब्रों से मौक़िफ़े क़ियामत (क़ियामत क़ाइम होने की जगह) की तरफ़ **107 :** अपने सरों से ख़ाक झाड़ते और "سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ" कहते और येह इक़रार करते कि **अल्लाह** ही पैदा करने वाला और मरने के बा'द उठाने वाला है। **108 :** दुन्या में या क़ब्रों में **109 :** ईमानदार **110 :** कि वोह काफ़िरों से **111 :** नर्म हो या पाकीज़ा हो अदब और तहज़ीब की हो, इर्शाद व हिदायत की हो, कुफ़्फ़ार अगर बेहूदगी करें तो उन का जवाब उन्हीं के अन्दाज़ में न दिया जाए। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन मुसल्मानों के साथ बद कलामियां करते और उन्हें ईज़ाएं देते थे, उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से इस की शिकायत की, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और मुसल्मानों को बताया गया कि वोह कुफ़्फ़ार की जाहिलाना बातों का वैसा ही जवाब न दें, सब्र करें और "يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ" कह दें। येह हुक्म क़िताल व जिहाद के हुक्म से पहले था, बा'द को मन्सूख़ हो गया और इर्शाद फ़रमाया गया "يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ" और एक क़ौल येह है कि येह आयत हज़रते उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के हक़ में नाज़िल हुई, एक काफ़िर ने उन की शान में बेहूदा कलिमा ज़बान से निकाला था, **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें सब्र करने और मुआ़फ़ फ़रमाने का हुक्म दिया। **112 :** और तुम्हें तौबा और ईमान की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। **113 :** कि तुम उन के आ'माल के ज़िम्मेदार होते। **114 :** सब के अह़वाल को और इस को कि कौन किस लाइक़ है। **115 :** मख़्सूस फ़ज़ाइल के साथ जैसे कि हज़रते इब्राहीम को ख़लील किया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को कलीम और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को हबीब। **116 :** ज़बूर किताबे इलाही है जो हज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुई, इस में एक सो पचास सूरतें हैं, सब में दुआ़ और **अल्लाह** तआ़ला की सना और उस की तह़मीद व तम्जीद है, न उस

www.dawateislami.net

الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ

तक्लीफ़ दूर करने और न फेर देने का[117] वोह मक़्बूल बन्दे जिन्हें येह काफ़िर पूजते हैं[118] वोह आप ही अपने रब की त़रफ़

الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ

वसीला ढूंडते हैं कि उन में कौन ज़ियादा मुक़र्रब है[119] उस की रह़मत की उम्मीद रखते और उस के अ़ज़ाब से डरते हैं[120] बेशक

عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾ وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا

तुम्हारे रब का अ़ज़ाब डर की चीज़ है और कोई बस्ती नहीं मगर येह कि हम उसे रोज़े क़ियामत

قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ

से पहले नेस्त (हलाक) कर देंगे या उसे सख़्त अ़ज़ाब देंगे[121] येह किताब में[122]

مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا

लिखा हुवा है और हम ऐसी निशानियां भेजने से यूं ही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने

الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَمَا نُرْسِلُ

झुटलाया[123] और हम ने समूद को[124] नाक़ा दिया (ऊंटनी दी) आंखें खोलने को[125] तो उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया[126] और हम ऐसी निशानियां

में ह़लाल व ह़राम का बयान न फ़राइज़ न ह़ुदूद व अह़काम, इस आयत में ख़ुसूसिय्यत के साथ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का नाम ले कर ज़िक्र फ़रमाया गया। **मुफ़स्सिरीन** ने इस के चन्द वुजूह बयान किये हैं : **एक** येह कि इस आयत में बयान फ़रमाया गया कि अम्बिया में **अल्लाह** तआ़ला ने बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी, फिर इर्शाद किया कि ह़ज़रते दावूद को ज़बूर अ़त़ा की बा वुजूदे कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को नुबुव्वत के साथ मुल्क भी अ़त़ा किया था लेकिन उस का ज़िक्र न फ़रमाया, इस में तम्बीह है कि आयत में जिस फ़ज़ीलत का ज़िक्र है वोह फ़ज़ीलत इ़ल्म है न कि फ़ज़ीलते मुल्क व माल। **दूसरी** वज्ह येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बूर में फ़रमाया है कि मुह़म्मद ख़ातमुल अम्बिया हैं और उन की उम्मत ख़ैरुल उमम, इसी सबब से आयत में ह़ज़रते दावूद और ज़बूर का ज़िक्र ख़ुसूसिय्यत से फ़रमाया गया। **तीसरी** वज्ह येह है कि यहूद का गुमान था कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द कोई नबी नहीं और तौरैत के बा'द कोई किताब नहीं, इस आयत में ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को ज़बूर अ़त़ा फ़रमाने का ज़िक्र कर के यहूद की तक्ज़ीब कर दी गई और इन के दा'वे का बुत़लान ज़ाहिर फ़रमा दिया गया ग़रज़ कि येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़ज़ीलते कुब्रा पर दलालत करती है।

क़त़्आ : اَے وصف تو دَر کتاب موسیٰ وَے نعت تو دَر زبورِ داود مقصود تونی ز آفرینش باقی بہ طفیل تست موجود

(**तरजमा : या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ही के औसाफ़े बा कमाल तो मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की किताब तौरात में हैं और वाह ! इसी त़रह़ आप की ना'त दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की किताब ज़बूर में मौजूद है, पस आप ही तो इस काएनात का मक़्सूद हैं, बाक़ी तो सब कुछ फ़क़त़ आप के तुफ़ैल से है)। **117 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार जब क़ह़त़े शदीद में मुब्तला हुए और नौबत यहां तक पहुंची कि कुत्ते और मुर्दार खा गए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर में फ़रियाद लाए और आप से दुआ़ की इल्तिजा की, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जब बुतों को ख़ुदा मानते हो तो इस वक़्त उन्हें पुकारो और वोह तुम्हारी मदद करें और जब तुम जानते हो कि वोह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते तो क्यूं उन्हें मा'बूद बनाते हो। **118 :** जैसे कि ह़ज़रते ईसा और ह़ज़रते उ़ज़ैर और मलाएका। **शाने नुज़ूल :** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : येह आयत एक जमाअ़ते अ़रब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो जिन्नात के एक गुरोह को पूजते थे, वोह जिन्नात इस्लाम ले आए और उन के पूजने वालों को ख़बर न हुई **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और उन्हें आ़र दिलाई। **119 :** ताकि जो सब से ज़ियादा मुक़र्रब हो उस को वसीला बनाएं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुक़र्रब बन्दों को बारगाहे इलाही में वसीला बनाना जाइज़ और **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है। **120 :** काफ़िर इन्हें किस त़रह़ मा'बूद समझते हैं। **121 :** क़त्ल वग़ैरा के साथ जब वोह कुफ़्र करें और मआ़सी में मुब्तला हों। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : जब किसी बस्ती में ज़िना और सूद की कसरत होती है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के हलाक का ह़ुक्म देता है। **122 :** लौह़े महफ़ूज़ में। **123 :** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अहले मक्का ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि सफ़ा पहाड़

www.dawateislami.net

بِالْاٰیٰتِ اِلَّا تَخْوِیْفًا ﴿۵۹﴾ وَ اِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِؕ وَ مَا

नहीं भेजते मगर डराने को[127] और जब हम ने तुम से फ़रमाया कि सब लोग तुम्हारे रब के क़ाबू में हैं[128] और हम

جَعَلْنَا الرُّءْیَا الَّتِیْۤ اَرَیْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَ الشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِی

ने न किया वोह दिखावा[129] जो तुम्हें दिखाया था[130] मगर लोगों की आज़्माइश को[131] और वोह पेड़ जिस पर क़ुरआन

الْقُرْاٰنِؕ وَ نُخَوِّفُهُمْۙ فَمَا یَزِیْدُهُمْ اِلَّا طُغْیَانًا كَبِیْرًا ﴿۶۰﴾ وَ اِذْ قُلْنَا

में ला'नत है[132] और हम उन्हें डराते हैं[133] तो उन्हें नहीं बढ़ती मगर बड़ी सरकशी और याद करो जब हम ने

لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ

फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो[134] तो उन सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस के बोला क्या मैं इसे सज्दा करूं

لِمَنْ خَلَقْتَ طِیْنًاۚ ﴿۶۱﴾ قَالَ اَرَءَیْتَكَ هٰذَا الَّذِیْ كَرَّمْتَ عَلَیَّ٘ لَىٕنْ

जिसे तू ने मिट्टी से बनाया बोला[135] देख तो जो येह तू ने मुझ से मुअ़ज़्ज़ रखा[136] अगर

اَخَّرْتَنِ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّیَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ

तू ने मुझे क़ियामत तक मोहलत दी तो ज़रूर मैं इस की औलाद को पीस डालूं (बरबाद कर डालूं)गा[137] मगर थोड़ा[138] फ़रमाया

اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾

दूर हो[139] तो उन में जो तेरी पैरवी करेगा तो बेशक तुम सब का बदला जहन्नम है भरपूर सज़ा

को सोना कर दें और पहाड़ों को सर ज़मीने मक्का से हटा दें। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को वह्य फ़रमाई कि आप फ़रमाएं तो आप की उम्मत को मोहलत दी जाए और अगर आप फ़रमाएं तो जो उन्हों ने त़लब किया है वोह पूरा किया जाए लेकिन अगर फिर भी वोह ईमान न लाए तो उन को हलाक कर के नेस्तो नाबूद कर दिया जाएगा इस लिये कि हमारी सुन्नत येही है कि जब कोई क़ौम निशानी त़लब कर के ईमान नहीं लाती तो हम उसे हलाक कर देते हैं और मोहलत नहीं देते, ऐसा ही हम ने पहलों के साथ किया है, इसी बयान में येह आयत नाज़िल हुई। **124 :** उन के ह़स्बे त़लब **125 :** या'नी हुज्जते वाज़ेह़ा (वाज़ेह़ व ज़बर दस्त दलाइल) **126 :** और कुफ़्र किया कि उस के مِنَ الله होने से मुन्किर हो गए। **127 :** जल्द आने वाले अ़ज़ाब से। **128 :** उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में तो आप तब्लीग़ फ़रमाइये और किसी का ख़ौफ़ न कीजिये **अल्लाह** आप का निगहबान है। **129 :** या'नी मुआ़यना अ़जाइबे आयाते इलाहिय्यह का। **130 :** शबे मे'राज ब ह़ालते बेदारी **131 :** या'नी अहले मक्का की। चुनान्चे जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें वाक़िअ़ए मे'राज की ख़बर दी तो उन्हों ने इस की तक्ज़ीब की और बा'ज़ मुरतद हो गए और तमस्ख़ुर से इमारते बैतुल मक़्दिस का नक़्शा दरयाफ़्त करने लगे। हु़ज़ूर ने सारा नक़्शा बता दिया तो इस पर कुफ़्फ़ार आप को साह़िर कहने लगे। **132 :** या'नी दरख़्ते ज़क़्क़ूम जो जहन्नम में पैदा होता है, इस को सबबे आज़्माइश बना दिया यहां तक कि अबू जह्ल ने कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तुम को जहन्नम की आग से डराते हैं कि वोह पथ्थरों को जला देगी फिर येह भी फ़रमाते हैं कि उस में दरख़्त उगेंगे, आग में दरख़्त कहां रह सकता है? येह ए'तिराज़ उन्हों ने किया और क़ुदरते इलाही से ग़ाफ़िल रहे, न समझे कि उस क़ादिरे मुख़्तार की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना कुछ बईद नहीं, समन्दल एक कीड़ा होता है जो आग में पैदा होता है आग ही में रहता है। बिलादे तुर्क में इस के ऊन की तोलियां बनाई जाती थीं जो मैली हो जाने पर आग में डाल कर साफ़ कर ली जातीं और जलती न थीं। शुतुर मुर्ग़ अंगारे खा जाता है **अल्लाह** की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना क्या बईद है। **133 :** दीनी और दुन्यवी ख़ौफ़नाक उमूर से **134 :** तह़िय्यत का **135 :** शैत़ान **136 :** और इस को मुझ पर फ़ज़ीलत दी और इस को सज्दा कराया तो मैं क़सम खाता हूं कि **137 :** गुमराह कर के **138 :** जिन्हें **अल्लाह** बचाए और मह़फ़ूज़ रखे, वोह उस के मुख़्लिस बन्दे हैं, शैत़ान के इस कलाम पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने उस से **139 :** तुझे नफ़्ख़ए ऊला (पहली मरतबा सूर फूंके जाने) तक मोहलत दी गई।

www.dawateislami.net

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ

और डिगा दे (बहका दे) उन में से जिस पर क़ुदरत पाए अपनी आवाज़ से[140] और उन पर लाम बांध ला (फ़ौजी लश्कर चढ़ा ला) अपने सुवारों और

رَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ

अपने पियादों का[141] और उन का साझी हो मालों और बच्चों में[142] और उन्हें वा'दा दे[143] और शैतान उन्हें वा'दा

الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَ

नहीं देता मगर फ़रेब से बेशक जो मेरे बन्दे हैं[144] उन पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं और

كَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾ رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ

तेरा रब काफ़ी है काम बनाने को[145] तुम्हारा रब वोह है कि तुम्हारे लिये दरिया में कश्ती रवां करता है

لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ

कि[146] तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो बेशक वोह तुम पर मेहरबान है और जब तुम्हें दरिया

فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ

में मुसीबत पहुंचती है[147] तो उस के सिवा जिन्हें पूजते हो सब गुम हो जाते हैं[148] फिर जब वोह तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ नजात देता है

اَعْرَضْتُمْ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ

तो मुंह फेर लेते हो[149] और आदमी बड़ा नाशुक्रा है क्या तुम[150] इस से निडर हुए कि वोह ख़ुश्की ही का

جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ اَمْ

कोई किनारा तुम्हारे साथ धंसा दे[151] या तुम पर पथराव भेजे[152] फिर अपना कोई हिमायती न पाओ[153] या

140 : वस्वसे डाल कर और मा'सियत की तरफ़ बुला कर। बा'ज़ उलमा ने फ़रमाया कि मुराद इस से गाने बाजे, लह्वो लअ़ब की आवाज़ें हैं। इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मन्क़ूल है कि जो आवाज़ अल्लाह तआ़ला की मरज़ी के ख़िलाफ़ मुंह से निकले वोह शैतानी आवाज़ है। **141 :** या'नी अपने सब मक्र तमाम (फ़रेब मुकम्मल) कर ले और अपने तमाम लश्करों से मदद ले। **142 :** ज़ज्जाज ने कहा कि जो गुनाह माल में हो या औलाद में हो इब्लीस उस में शरीक है जैसे कि सूद और माल हासिल करने के दूसरे हराम तरीक़े और फ़िस्क़ व मम्नूआ़त में ख़र्च करना और ज़कात न देना येह माली उमूर हैं जिन में शैतान की शिर्कत है और ज़िना व ना जाइज़ तरीक़े से औलाद हासिल करना येह औलाद में शैतान की शिर्कत है। **143 :** अपनी ताअ़त पर **144 :** नेक मुख़्लिस अम्बिया और अस्हाबे फ़ज़्लो सलाह। **145 :** उन्हें तुझ से महफ़ूज़ रखेगा और शैतानी मकाइद और वसाविस (शैतानी मक्रो फ़रेब और वस्वसों) को दफ़्अ़ फ़रमाएगा। **146 :** इन में तिजारतों के लिये सफ़र कर के **147 :** और डूबने का अन्देशा होता है **148 :** और उन झूटे मा'बूदों में से किसी का नाम ज़बान पर नहीं आता, उस वक़्त अल्लाह तआ़ला से हाजत रवाई चाहते हैं। **149 :** उस की तौहीद से और फिर उन्हीं नाकारा बुतों की परस्तिश शुरूअ़ कर देते हो। **150 :** दरिया से नजात पा कर **151 :** जैसा कि क़ारून को धंसा दिया था। मक़्सद येह है कि ख़ुश्की व तरी सब उस के तह्ते क़ुदरत हैं जैसा वोह समुन्दर में ग़र्क़ करने और बचाने दोनों पर क़ादिर है ऐसा ही ख़ुश्की में भी ज़मीन के अन्दर धंसा देने और महफ़ूज़ रखने दोनों पर क़ादिर है। ख़ुश्की हो या तरी हर कहीं बन्दा उस की रह्मत का मोह्ताज है। वोह ज़मीन में धंसाने पर भी क़ादिर है और येह भी क़ुदरत रखता है कि **152 :** जैसा क़ौमे लूत पर भेजा था। **153 :** जो तुम्हें बचा सके।

www.dawateislami.net

اَمِنْتُمْ اَنْ یُّعِیْدَكُمْ فِیْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَیُرْسِلَ عَلَیْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ

इस से निडर (बे ख़ौफ़) हुए कि तुम्हें दोबारा दरिया में ले जाए फिर तुम पर जहाज़ तोड़ने वाली

الرِّیْحِ فَیُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَیْنَا بِهٖ تَبِیْعًا ﴿٦٩﴾ وَ

आंधी भेजे तो तुम को तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे फिर अपने लिये कोई ऐसा न पाओ कि इस पर हमारा पीछा करे[154] और

لَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِیْٓ اٰدَمَ وَ حَمَلْنٰهُمْ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ

बेशक हम ने औलादे आदम को इ़ज़्ज़त दी[155] और इन को ख़ुश्की और तरी में[156] सुवार किया और इन को सुथरी चीज़ें

الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِیْلًا ﴿٧٠﴾ یَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ ع ١٠ ٧

रोज़ी दीं[157] और इन को अपनी बहुत मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल किया[158] जिस दिन हम हर जमाअ़त को

اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ فَاُولٰٓىِٕكَ یَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ

उस के इमाम के साथ बुलाएंगे[159] तो जो अपना नामा दाहने हाथ में दिया गया येह लोग अपना नामा पढ़ेंगे[160]

وَ لَا یُظْلَمُوْنَ فَتِیْلًا ﴿٧١﴾ وَ مَنْ كَانَ فِیْ هٰذِهٖۤ اَعْمٰى فَهُوَ فِی الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى

और तागे भर उन का हक़ न दबाया जाएगा[161] और जो इस ज़िन्दगी में[162] अन्धा हो वोह आख़िरत में अन्धा है[163]

154 : और हम से दरयाफ़्त कर सके कि हम ने ऐसा क्यूं किया क्यूं कि हम क़ादिरे मुख़्तार हैं जो चाहते हैं करते हैं हमारे काम में कोई दख़्ल देने वाला और दम मारने वाला नहीं। **155 :** अ़क़्ल व इ़ल्म व गोयाई, पाकीज़ा सूरत, मो'तदिल क़ामत और मआ़श व मआ़द की तदाबीर और तमाम चीज़ों पर इस्तीला व तस्ख़ीर (ग़लबा व क़ाबू) अ़ता फ़रमा कर और इस के इ़लावा और बहुत सी फ़ज़ीलतें दे कर **156 :** जानवरों और दूसरी सुवारियों और कश्तियों और जहाज़ों वग़ैरा में **157 :** लतीफ़ ख़ुश ज़ाएक़ा हैवानी और नबाती हर तरह की ग़िज़ाएं ख़ूब अच्छी तरह पकी हुई क्यूं कि इन्सान के सिवा हैवानात में पकी हुई ग़िज़ा और किसी की ख़ूराक नहीं। **158 :** हसन का क़ौल है कि अक्सर से कुल मुराद है और अक्सर का लफ़्ज़ कुल के मा'ना में बोला जाता है। क़ुरआने करीम में भी इर्शाद हुवा : ''وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ'' और ''مَا یَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا'' में ''अक्सर'' ब मा'ना ''कुल'' है, लिहाज़ा मलाएका भी इस में दाख़िल हैं और ख़वासे बशर या'नी अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام ख़वासे मलाएका से अफ़्ज़ल हैं और सुलहाए बशर (नेक व मुत्तक़ी इन्सान) अ़वामे मलाएका (आ़म फ़िरिश्तों) से। हदीस शरीफ़ में है कि मोमिन **अल्लाह** के नज़्दीक मलाएका से ज़ियादा करामत रखता है। वज्ह येह है कि **फ़िरिश्ते** ताअ़त पर मजबूर हैं येही इन की सिरिश्त (फ़ित्रत) है इन में अ़क़्ल है शह्वत नहीं और **बहाइम** (जानवरों) में शह्वत है अ़क़्ल नहीं और **आदमी** शह्वत व अ़क़्ल दोनों का जामेअ़ है तो जिस ने अ़क़्ल को शह्वत पर ग़ालिब किया वोह मलाएका से अफ़्ज़ल है और जिस ने शह्वत को अ़क़्ल पर ग़ालिब किया वोह बहाइम से बदतर है। **159 :** जिस का वोह दुन्या में इत्तिबाअ़ करता था। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : इस से वोह इमामे ज़मां मुराद है जिस की दा'वत पर दुन्या में लोग चले ख़्वाह उस ने हक़ की दा'वत की हो या बातिल की। हासिल येह है कि हर क़ौम अपने सरदार के पास जम्अ़ होगी जिस के हुक्म पर दुन्या में चलती रही और उन्हें उसी के नाम से पुकारा जाएगा कि ऐ फ़ुलां के मुत्तबिईन। **160 :** नेक लोग जो दुन्या में साहिबे बसीरत थे और राहे रास्त पर रहे उन को उन का नामए आ'माल दाहने हाथ में दिया जाएगा, वोह उस में नेकियां और ताअ़तें देखेंगे तो उस को ज़ौक़ो शौक़ से पढ़ेंगे और जो बद बख़्त हैं कुफ़्फ़ार हैं उन के नामए आ'माल बाएं हाथ में दिये जाएंगे वोह उन्हें देख कर शरमिन्दा होंगे और दहशत से पूरी तरह पढ़ने पर क़ादिर न होंगे। **161 :** या'नी सवाबे आ'माल में उन से अदना भी कमी न की जाएगी। **162 :** दुन्या की हक़ के देखने से **163 :** नजात की राह से। मा'ना येह हैं कि जो दुन्या में काफ़िर गुमराह है वोह आख़िरत में अन्धा होगा, क्यूं कि दुन्या में तौबा मक़्बूल है और आख़िरत में तौबा मक़्बूल नहीं।

www.dawateislami.net

وَاَضَلُّ سَبِیْلًا ﴿٧٢﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَیَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِیْٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ

और और भी ज़ियादा गुमराह और वोह तो क़रीब था कि तुम्हें कुछ लग़्ज़िश देते हमारी वह्य से जो हम ने तुम को भेजी

لِتَفْتَرِیَ عَلَیْنَا غَیْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِیْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ اَنْ

कि तुम हमारी त़रफ़ कुछ और निस्बत कर दो और ऐसा होता तो वोह तुम को अपना गहरा दोस्त बना लेते[164] और अगर हम तुम्हें[165]

ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَیْهِمْ شَیْـًٔا قَلِیْلًا ﴿٧٤﴾ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ

साबित क़दम न रखते तो क़रीब था कि तुम उन की त़रफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते और ऐसा होता तो हम तुम को दूनी

الْحَیٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَیْنَا نَصِیْرًا ﴿٧٥﴾ وَاِنْ

उ़म्र और दो चन्द मौत[166] का मज़ा देते फिर तुम हमारे मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाते और बेशक

كَادُوْا لَیَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِیُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا یَلْبَثُوْنَ

क़रीब था कि वोह तुम्हें इस ज़मीन से[167] डिगा दें (हटा दें) कि तुम्हें इस से बाहर कर दें और ऐसा होता तो वोह तुम्हारे

خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا

पीछे न ठहरते मगर थोड़ा[168] दस्तूर उन का जो हम ने तुम से पहले रसूल भेजे[169] और

تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِیْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّیْلِ ع ٨

तुम हमारा क़ानून बदलता न पाओगे नमाज़ क़ाइम रखो सूरज ढलने से रात की अंधेरी तक[170]

وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾ وَمِنَ الَّیْلِ فَتَهَجَّدْ

और सुब्ह़ का क़ुरआन[171] बेशक सुब्ह़ के क़ुरआन में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं[172] और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद

164 शाने नुज़ूल : (क़बीलए) सक़ीफ़ का एक वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास आ कर कहने लगा कि अगर आप तीन बातें मन्ज़ूर कर लें तो हम आप की बैअ़त कर लें : **एक** तो येह कि नमाज़ में झुकेंगे नहीं या'नी रुकूअ़ सज्दा न करेंगे। **दूसरी** येह कि हम अपने बुत अपने हाथों से न तोड़ेंगे। **तीसरे** येह कि लात को पूजेंगे तो नहीं मगर एक साल उस से नफ़्अ़ उठा लें कि उस के पूजने वाले जो नज़्रें चढ़ावे लाएं उस को वुसूल कर लें। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस दीन में कुछ भलाई नहीं जिस में रुकूअ़ सज्दा न हो और बुतों को तोड़ने की बाबत तुम्हारी मरज़ी और लात व उ़ज़्ज़ा से फ़ाएदा उठाने की इजाज़त मैं हरगिज़ न दूंगा। वोह कहने लगे : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हम चाहते येह हैं कि आप की त़रफ़ से हमें ऐसा ए'ज़ाज़ मिले जो दूसरों को न मिला हो ताकि हम फ़ख़्र कर सकें, इस में अगर आप को अन्देशा हो कि अ़रब शिकायत करेंगे तो आप उन से कह दीजियेगा कि **अल्लाह** का हुक्म ही ऐसा था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **165 :** मा'लूम कर के **166 :** के अ़ज़ाब **167 :** या'नी अ़रब से। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने इत्तिफ़ाक़ कर के चाहा कि सब मिल कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सर ज़मीने अ़रब से बाहर कर दें लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन का येह इरादा पूरा न होने दिया और उन की येह मुराद बर न आई, इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **168 :** और जल्द हलाक कर दिये जाते। **169 :** या'नी जिस क़ौम ने अपने दरमियान से अपने रसूल को निकाला उन के लिये सुन्नते इलाही येही रही कि उन्हें हलाक कर दिया। **170 :** इस में ज़ोहर से इ़शा तक की चार नमाज़ें आ गईं। **171 :** इस से नमाज़े फ़ज्र मुराद है और इस को क़ुरआन इस लिये फ़रमाया गया कि क़िराअत एक रुक्न है और जुज़ से कुल ता'बीर किया जाता है जैसा कि क़ुरआने करीम में नमाज़ को रुकूअ़ व सुजूद से भी ता'बीर किया गया है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि क़िराअत नमाज़ का रुक्न है। **172 :** या'नी नमाज़े फ़ज्र में रात

www.dawateislami.net

بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ

करो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है[173] क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी हम्द करें[174] और यूं अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब

اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ

मुझे सच्ची त़रह़ दाख़िल कर और सच्ची त़रह़ बाहर ले जा[175] और मुझे

لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ

अपनी त़रफ़ से मददगार ग़लबा दे[176] और फ़रमाओ कि ह़क़ आया और बात़िल मिट गया[177] बेशक

الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ

बात़िल को मिटना ही था[178] और हम क़ुरआन में उतारते हैं वोह चीज़[179] जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى

है[180] और इस से ज़ालिमों को[181] नुक़्सान ही बढ़ता है और जब हम आदमी पर

के फ़िरिश्ते भी मौजूद होते हैं और दिन के फ़िरिश्ते भी आ जाते हैं। **173 तहज्जुद :** नमाज़ के लिये नींद को छोड़ने या बा'द इशा सोने के बा'द जो नमाज़ पढ़ी जाए उस को कहते हैं। नमाज़े तहज्जुद की ह़दीस शरीफ़ में बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं, नमाज़े तहज्जुद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर फ़र्ज़ थी, जुम्हूर का येही क़ौल है हुज़ूर की उम्मत के लिये येह नमाज़ सुन्नत है। **मस्अला :** तहज्जुद की कम से कम दो रक्अ़तें और मुतवस्सित़ चार और ज़ियादा आठ हैं और सुन्नत येह है कि दो दो रक्अ़त की निय्यत से पढ़ी जाएं। **मस्अला :** अगर आदमी शब की एक तिहाई इ़बादत करना चाहे और दो तिहाई सोना तो शब के तीन ह़िस्से कर ले दरमियानी तिहाई में तहज्जुद पढ़ना अफ़्ज़ल है और अगर चाहे कि आधी रात सोए आधी रात इ़बादत करे तो निस्फ़े अख़ीर अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** जो शख़्स नमाज़े तहज्जुद का आ़दी हो उस के लिये तहज्जुद तर्क करना मक्रूह है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है। (ردالمحتار) **174 :** और मक़ामे महमूद मक़ामे शफ़ाअ़त है कि इस में अव्वलीन व आख़िरीन हुज़ूर की ह़म्द करेंगे, इसी पर जुम्हूर हैं। **175 :** जहां भी मैं दाख़िल होऊं और जहां से भी मैं बाहर आऊं ख़्वाह वोह कोई मकान हो या मन्सब हो या काम। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मुराद येह है कि मुझे क़ब्र में अपनी रिज़ा और त़हारत के साथ दाख़िल कर और वक़्ते बि'सत इ़ज़्ज़त व करामत के साथ बाहर ला। बा'ज़ ने कहा : मा'ना येह हैं कि मुझे अपनी ता़अ़त में सिद्क़ के साथ दाख़िल कर और अपने मनाही (मम्नूअ़ कामों) से सिद्क़ के साथ ख़ारिज फ़रमा और इस के मा'ना में एक क़ौल येह भी है कि मन्सबे नुबुव्वत में मुझे सिद्क़ के साथ दाख़िल और सिद्क़ के साथ दुन्या से रुख़्सत के वक़्त नुबुव्वत के हुक़ूक़े वाजिबा से ओ़ह्दा बरआ फ़रमा। एक क़ौल येह भी है कि मुझे मदीनए त़य्यिबा में पसन्दीदा दाख़िला इनायत कर और मक्कए मुकर्रमा से मेरा ख़ुरूज सिद्क़ के साथ कर कि इस से मेरा दिल ग़मगीन न हो, मगर येह तौजीह इस सूरत में सह़ीह़ हो सकती है जब कि येह आयत मदनी न हो जैसा कि अ़ल्लामा सुयूत़ी ने "قِيْل" फ़रमा कर इस आयत के मदनी होने का क़ौल ज़ईफ़ होने की त़रफ़ इशारा किया। **176 :** वोह क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमा जिस से मैं तेरे दुश्मनों पर ग़ालिब होऊं और वोह हुज्जत जिस से मैं हर मुख़ालिफ़ पर फ़त्ह़ पाऊं और वोह ग़लबए ज़ाहिरा जिस से मैं तेरे दीन को तक़्वियत दूं, येह दुआ क़बूल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब से उन के दीन को ग़ालिब करने और उन्हें दुश्मनों से महफ़ूज़ रखने का वा'दा फ़रमाया। **177 :** या'नी इस्लाम आया और कुफ़्र मिट गया या क़ुरआन आया और शैत़ान हलाक हुवा। **178 :** क्यूं कि अगर्चे बात़िल को किसी वक़्त में दौलत व सौलत (रो'ब व दबदबा) ह़ासिल हो मगर इस को पाएदारी नहीं, इस का अन्जाम बरबादी व ख़्वारी है। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोज़े फ़त्ह़ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो का'बए मुक़द्दसा के गिर्द तीन सो साठ बुत नस्ब किये हुए थे जिन को लोहे और रांग (क़लई धात) से जोड़ कर मज़्बूत़ किया गया था, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में एक लकड़ी थी हुज़ूर येह आयत पढ़ कर इस लकड़ी से जिस बुत की त़रफ़ इशारा फ़रमाते जाते थे वोह गिरता जाता था। **179 :** सूरतें और आयतें **180 :** कि इस से अमराज़े ज़ाहिरा और बात़िना, ज़लालत व जहालत वग़ैरा दूर होते हैं और ज़ाहिरी व बात़िनी सिह्ह़त ह़ासिल होती है, ए'तिक़ादाते बात़िला व अख़्लाक़े रज़ीला (ग़लत़ अ़क़ीदे और बुरे अख़्लाक़) दफ़्अ़ होते हैं और अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा व मआ़रिफ़े इलाहिय्यह व सिफ़ाते ह़मीदा व अख़्लाक़े फ़ाज़िला (सह़ीह़ अ़क़ीदे, **अल्लाह** तआ़ला की मा'रिफ़त व पहचान, बेहतरीन सिफ़ात और ज़बर दस्त अख़्लाक़) ह़ासिल होते हैं क्यूं कि येह किताबे मजीद ऐसे उ़लूम व दलाइल पर मुश्तमिल है जो वह्मानी व शैत़ानी ज़ुल्मतों को

www.dawateislami.net

الۡاِنۡسَانِ اَعۡرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوۡسًا ﴿٨٣﴾ قُلۡ

एह्सान करते हैं[182] मुंह फेर लेता है और अपनी त़रफ़ दूर हट जाता है[183] और जब उसे बुराई पहुंचे[184] तो ना उम्मीद हो जाता है[185] तुम फ़रमाओ

كُلٌّ يَّعۡمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمۡ اَعۡلَمُ بِمَنۡ هُوَ اَهۡدٰى سَبِيۡلًا ﴿٨٤﴾ ع وَ

सब अपने कैंडे (अन्दाज़) पर काम करते हैं[186] तो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कौन ज़ियादा राह पर है और

يَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ الرُّوۡحِ ؕ قُلِ الرُّوۡحُ مِنۡ اَمۡرِ رَبِّىۡ وَمَاۤ اُوۡتِيۡتُمۡ مِّنَ الۡعِلۡمِ

तुम से रूह़ को पूछते हैं तुम फ़रमाओ रूह़ मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है और तुम्हें इ़ल्म न मिला

اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿٨٥﴾ وَلَئِنۡ شِئۡنَا لَنَذۡهَبَنَّ بِالَّذِىۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ

मगर थोड़ा[187] और अगर हम चाहते तो येह वह़्य जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ की उसे ले जाते[188] फिर तुम कोई न पाते कि

لَكَ بِهٖ عَلَيۡنَا وَكِيۡلًا ﴿٨٦﴾ لا اِلَّا رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضۡلَهٗ كَانَ

तुम्हारे लिये हमारे हुज़ूर उस पर वकालत करता मगर तुम्हारे रब की रह़मत[189] बेशक तुम पर उस का

عَلَيۡكَ كَبِيۡرًا ﴿٨٧﴾ قُلۡ لَّئِنِ اجۡتَمَعَتِ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلٰۤى اَنۡ يَّاۡتُوۡا

बड़ा फ़ज़्ल है[190] तुम फ़रमाओ अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि[191] इस कुरआन

अपने अन्वार से नेस्तो नाबूद कर देते हैं और इस का एक एक ह़र्फ़ बरकात का गन्जीना है जिस से जिस्मानी अमराज़ और आसेब दूर होते हैं। **181 :** या'नी काफ़िरों को जो इस की तक्ज़ीब करते हैं। **182 :** या'नी काफ़िर पर कि उस को सिह़्ह़त और वुस्अ़त अ़त़ा फ़रमाते हैं तो वोह हमारे ज़िक्र व दुआ़ और त़ाअ़त व अदाए शुक्र से **183 :** या'नी तकब्बुर करता है। **184 :** कोई शिद्दत व ज़रर (तक्लीफ़ व नुक़्सान) और कोई फ़क़्र व ह़ादिसा (मुफ़्लिसी व सदमा) तो तज़र्रोअ़ व ज़ारी से (गिड़गिड़ाते और रोते हुए) दुआ़एं करता है और उन दुआ़ओं के क़बूल का असर ज़ाहिर नहीं होता। **185 :** मोमिन को ऐसा न चाहिये अगर इजाबते दुआ़ में ताख़ीर हो तो वोह मायूस न हो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का उम्मीद वार रहे। **186 :** हम अपने त़रीक़े पर तुम अपने त़रीक़े पर जिस का जौहरे ज़ात, शरीफ़ व त़ाहिर है, उस से अफ़्आ़ले जमीला व अख़्लाक़े पाकीज़ा सादिर होते हैं और जिस का नफ़्स ख़बीस है उस से अफ़्आ़ले ख़बीसा रदिय्या सरज़द होते हैं। **187 :** कुरैश मश्वरे के लिये जम्अ़ हुए और उन में बाहम गुफ़्तगू येह हुई कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم) हम में रहे और कभी हम ने उन को सिद्क़ो अमानत में कमज़ोर न पाया, कभी उन पर तोहमत लगाने का मौक़अ़ हाथ न आया, अब उन्हों ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया तो उन की सीरत और उन के चाल चलन पर कोई ऐ़ब लगाना तो मुम्किन नहीं है, यहूद से पूछना चाहिये कि ऐसी ह़ालत में क्या किया जाए ? इस मत़लब के लिये एक जमाअ़त यहूद के पास भेजी गई, यहूद ने कहा कि उन से तीन सुवाल करो अगर तीनों के जवाब न दें तो वोह नबी नहीं और अगर तीनों का जवाब दे दें जब भी नबी नहीं और अगर दो का जवाब दे दें एक का जवाब न दें तो वोह सच्चे नबी हैं, वोह तीन सुवाल येह हैं : अस्ह़ाबे कह्फ़ का वाक़िआ़, ज़ुल क़रनैन का वाक़िआ़ और रूह़ का ह़ाल ? चुनान्चे कुरैश ने हुज़ूर से येह सुवाल किये। आप ने अस्ह़ाबे कह्फ़ और ज़ुल क़रनैन के वाक़िआ़त तो मुफ़स्सल बयान फ़रमा दिये और रूह़ का मुआ़मला इब्हाम में रखा (या'नी पोशीदा रखा) जैसा कि तौरैत में मुब्हम रखा गया था। कुरैश येह सुवाल कर के नादिम हुए। इस में इख़्तिलाफ़ है कि सुवाल ह़क़ीक़ते रूह़ से था या इस की मख़्लूक़िय्यत से। जवाब दोनों का हो गया और आयत में येह भी बता दिया गया कि मख़्लूक़ का इ़ल्म इ़ल्मे इलाही के सामने क़लील है अगर्चे "مَآ اُوۡتِيۡتُمۡ" का ख़ित़ाब यहूद के साथ ख़ास हो। **188 :** या'नी कुरआने करीम को सीनों और सह़ीफ़ों से मह़्व कर देते (मिटा देते) और इस का कोई असर बाक़ी न छोड़ते। **189 :** कि क़ियामत तक इस को बाक़ी रखा और हर तग़य्युर व तबद्दुल से मह़फ़ूज़ फ़रमाया। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ ने फ़रमाया कि कुरआने पाक ख़ूब पढ़ो ! इस से पहले कि कुरआने पाक उठा लिया जाए क्यूं कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक कि कुरआने पाक न उठाया जाए। **190 :** कि उस ने आप पर कुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया और उस को बाक़ी व मह़फ़ूज़ रखा और आप को तमाम बनी आदम का सरदार और ख़ातमुन्नबिय्यीन किया और मक़ामे मह़मूद अ़त़ा फ़रमाया। **191 :** बलाग़त और ह़ुस्ने नज़्म व तरतीब और उ़लूमे ग़ैबिया व मआ़रिफ़े इलाहिय्यह में से किसी कमाल में।

www.dawateislami.net

بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

की मानिन्द ले आएं तो इस का मिस्ल न ला सकेंगे अगर्चे उन में एक दूसरे का

ظَهِیْرًا ﴿۸۸﴾ وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍۚ فَاَبٰۤى

मददगार हो[192] और बेशक हम ने लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मसल (मिसालें) त़रह़ त़रह़ बयान फ़रमाई तो अक्सर

اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۸۹﴾ وَ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ

आदमियों ने न माना मगर नाशुक्र करना[193] और बोले कि हम हरगिज़ तुम पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि तुम हमारे लिये

الْاَرْضِ یَنْۢبُوْعًا ﴿۹۰﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّ عِنَبٍ فَتُفَجِّرَ

ज़मीन से कोई चश्मा बहा दो[194] या तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो फिर तुम उस के अन्दर

192 शाने नुज़ूल : मुश्रिकीन ने कहा था कि हम चाहें तो इस क़ुरआन की मिस्ल बना लें, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने उन की तक्ज़ीब की, कि ख़ालिक़ के कलाम के मिस्ल मख़्लूक़ का कलाम हो ही नहीं सकता अगर वोह सब बाहम मिल कर कोशिश करें जब भी मुम्किन नहीं कि इस कलाम के मिस्ल ला सकें। चुनान्चे ऐसा ही हुवा तमाम कुफ़्फ़ार आ़जिज़ हुए और उन्हें रुस्वाई उठाना पड़ी और वोह एक सत़र भी क़ुरआने करीम के मुक़ाबिल बना कर पेश न कर सके। **193 :** और ह़क़ से मुन्किर होना इख़्तियार किया। **194 शाने नुज़ूल :** जब क़ुरआने करीम का ए'जाज़ (मो'जिज़ा) ख़ूब ज़ाहिर हो चुका और मो'जिज़ाते वाज़ेह़ात ने हुज्जत क़ाइम कर दी और कुफ़्फ़ार के लिये कोई जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही तो वोह लोगों को मुग़ालते में डालने के लिये त़रह़ त़रह़ की निशानियां त़लब करने लगे और उन्हों ने कह दिया कि हम हरगिज़ आप पर ईमान न लाएंगे। मरवी है कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सरदार का'बए मुअ़ज़्ज़मा में जम्अ़ हुए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बुलवाया। हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने कहा कि हम ने आप को इस लिये बुलाया है कि आज गुफ़्तगू कर के आप से मुआ़मला तै कर लें ताकि हम फिर आप के ह़क़ में मा'ज़ूर समझे जाएं, अ़रब में कोई आदमी ऐसा नहीं हुवा जिस ने अपनी क़ौम पर वोह शदाइद किये हों जो आप ने किये हैं, आप ने हमारे बाप दादा को बुरा कहा, हमारे दीन को ऐ़ब लगाए, हमारे दानिश मन्दों को कम अ़क़्ल ठहराया, मा'बूदों की तौहीन की, जमाअ़त मुतफ़र्रिक़ कर दी, कोई बुराई उठा न रखी, इस से तुम्हारी ग़रज़ क्या है? अगर तुम माल चाहते हो तो हम तुम्हारे लिये इतना माल जम्अ़ कर दें कि हमारी क़ौम में तुम सब से ज़ियादा मालदार हो जाओ, अगर ए'ज़ाज़ चाहते हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें, अगर मुल्क व सल्त़नत चाहते हो तो हम तुम्हें बादशाह तस्लीम कर लें, येह सब बातें करने के लिये हम तय्यार हैं और अगर तुम्हें कोई दिमाग़ी बीमारी हो गई है या कोई ख़लिश (चुभन व दर्द) हो गया है तो हम तुम्हारा इ़लाज करें और इस में जिस क़दर ख़र्च हो उठाएं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन में से कोई बात नहीं और मैं माल व सल्त़नत व सरदारी किसी चीज़ का त़लब गार नहीं, वाक़िआ़ सिर्फ़ इतना है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे रसूल बना कर भेजा और मुझ पर अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई और ह़ुक्म दिया कि मैं तुम्हें उस के मानने पर **अल्लाह** की रिज़ा और ने'मते आख़िरत की बिशारत दूं और इन्कार करने पर अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाऊं, मैं ने तुम्हें अपने रब का पयाम पहुंचाया अगर तुम इसे क़बूल करो तो येह तुम्हारे लिये दुन्या व आख़िरत की ख़ुश नसीबी है और न मानो तो मैं सब्र करूंगा और **अल्लाह** के फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा। इस पर उन लोगों ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) अगर आप हमारे मा'रूज़ात (पेशकश) को क़बूल नहीं करते हैं तो इन पहाड़ों को हटा दीजिये और मैदान साफ़ निकाल दीजिये और नहरें जारी कर दीजिये और हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये हम उन से पूछ देखें कि आप जो फ़रमाते हैं क्या येह सच है? अगर वोह कह देंगे तो हम मान लेंगे। हुज़ूर ने फ़रमाया : मैं इन बातों के लिये नहीं भेजा गया, जो पहुंचाने के लिये मैं भेजा गया था वोह मैं ने पहुंचा दिया अगर तुम मानो तुम्हारा नसीब न मानो तो मैं ख़ुदाई फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा। कुफ़्फ़ार ने कहा : फिर आप अपने रब से अ़र्ज़ कर के एक फ़िरिश्ता बुलवा लीजिये जो आप की तस्दीक़ करे और अपने लिये बाग़ और महल और सोने चांदी के ख़ज़ाने त़लब कीजिये। फ़रमाया कि मैं इस लिये नहीं भेजा गया, मैं बशीर व नज़ीर (ख़ुश ख़बरी देने और डर सुनाने वाला) बना कर भेजा गया हूं। इस पर कहने लगे : तो हम पर आस्मान गिरवा दीजिये और बा'ज़े उन में से येह बोले कि हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक आप **अल्लाह** को और फ़िरिश्तों को हमारे सामने न लाएं। इस पर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस मजलिस से उठ आए और अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या आप के साथ उठा और आप से कहने लगा : ख़ुदा की क़सम ! मैं कभी आप पर ईमान न लाऊंगा जब तक तुम सीढ़ी लगा कर आस्मान पर न चढ़ो और मेरी नज़रों के सामने वहां से एक किताब और फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त ले कर न आओ और ख़ुदा की क़सम ! अगर येह भी करो तो मैं समझता हूं कि मैं फिर भी न मानूंगा। रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब देखा कि येह लोग इस क़दर ज़िद और इ़नाद में हैं और इन की ह़क़ दुश्मनी ह़द से गुज़र गई है तो आप को उन की ह़ालत पर रन्ज हुवा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

www.dawateislami.net

اَلَّا تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ یَنْۢبُوْعًا ﴿۹۰﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِیْرًا ﴿۹۱﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَیْنَا

बहती नहरें रवां करो या तुम हम पर आस्मान गिरा दो जैसा तुम ने कहा है

كِسَفًا اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓىِٕكَةِ قَبِیْلًا ﴿۹۲﴾ اَوْ یَكُوْنَ لَكَ بَیْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ

टुकड़े टुकड़े या अल्लाह और फ़िरिश्तों को ज़ामिन ले आओ[195] या तुम्हारे लिये तिलाई (सोने का) घर हो

اَوْ تَرْقٰى فِی السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِیِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَیْنَا كِتٰبًا

या तुम आस्मान में चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ जाने पर भी हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हम पर एक किताब न उतारो

نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿۹۳﴾ وَمَا مَنَعَ ع

जो हम पढ़ें तुम फ़रमाओ पाकी है मेरे रब को मैं कौन हूं मगर आदमी अल्लाह का भेजा हुवा[196] और किस बात ने

النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰۤى اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا

लोगों को ईमान लाने से रोका जब उन के पास हिदायत आई मगर उसी ने कि बोले क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल

رَّسُوْلًا ﴿۹۴﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ فِی الْاَرْضِ مَلٰٓىِٕكَةٌ یَّمْشُوْنَ مُطْمَىِٕنِّیْنَ لَنَزَّلْنَا

बना कर भेजा[197] तुम फ़रमाओ अगर ज़मीन में फ़िरिश्ते होते[198] चैन (इत्मीनान) से चलते तो उन पर

عَلَیْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿۹۵﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِیْدًۢا بَیْنِیْ وَ

हम रसूल भी फ़िरिश्ता उतारते[199] तुम फ़रमाओ अल्लाह बस है गवाह मेरे

بَیْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا ﴿۹۶﴾ وَمَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ

तुम्हारे दरमियान[200] बेशक वोह अपने बन्दों को जानता देखता है और जिसे अल्लाह राह दे वोही

الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ

राह पर है और जिसे गुमराह करे[201] तो उन के लिये उस के सिवा कोई हिमायत वाले न पाओगे[202] और हम उन्हें

195 : जो हमारे सामने तुम्हारे सिद्क़ (सच्चा होने) की गवाही दें। **196 :** मेरा काम अल्लाह का पयाम पहुंचा देना है, वोह मैं ने पहुंचा दिया, अब जिस क़दर मो'जिज़ात व आयात यक़ीन व इत्मीनान के लिये दरकार हैं उन से बहुत ज़ियादा मेरा परवर्दगार ज़ाहिर फ़रमा चुका, हुज्जत ख़त्म हो गई, अब येह समझ लो कि रसूल के इन्कार करने और आयाते इलाहिय्यह से मुकरने का क्या अन्जाम होता है। **197 :** रसूलों को बशर ही जानते रहे और उन के मन्सबे नुबुव्वत और अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाए हुए कमालात के मुक़िर और मो'तरिफ़ (इक़्रार व ए'तिराफ़ करने वाले) न हुए, येही उन के कुफ़्र की अस्ल थी और इसी लिये वोह कहा करते थे कि कोई फ़िरिश्ता क्यूं नहीं भेजा गया, इस पर अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाता है कि ऐ ह़बीब ! इन से **198 :** वोही इस में बसते **199 :** क्यूं कि वोह उन की जिन्स से होता, लेकिन जब ज़मीन में आदमी बसते हैं तो उन का मलाएका में से रसूल तलब करना निहायत ही बे जा है। **200 :** मेरे सिद्क़ व अदाए फ़र्ज़े रिसालत और तुम्हारे किज़्बो अ़दावत पर **201 :** और तौफ़ीक़ न दे **202 :** जो उन्हें हिदायत करें।

www.dawateislami.net

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّ بُكْمًا وَّ صُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا

क़ियामत के दिन उन के मुंह के बल[203] उठाएंगे अन्धे और गूंगे और बहरे[204] उन का ठिकाना जहन्नम है जब कभी

النصف

خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ قَالُوْۤا

बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे येह उन की सज़ा है उस पर कि उन्हों ने हमारी आयतों से इन्कार किया और बोले

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّ رُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾ اَوَ لَمْ

क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तो क्या सचमुच हम नए बन कर उठाए जाएंगे और क्या

يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ يَّخْلُقَ

वोह नहीं देखते कि वोह अल्लाह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[205] उन लोगों की मिस्ल बना

مِثْلَهُمْ وَ جَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾

सकता है[206] और उस ने उन के लिये[207] एक मीआ़द ठहरा रखी है जिस में कुछ शुबा नहीं तो ज़ालिम नहीं मानते बे नाशुक्री किये[208]

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْۤ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ

तुम फ़रमाओ अगर तुम लोग मेरे रब की रह़मत के ख़ज़ानों के मालिक होते[209] तो उन्हें भी रोक रखते इस डर से कि ख़र्च

ع ٧

الْاِنْفَاقِ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍ

न हो जाएं * और आदमी बड़ा कन्जूस है और बेशक हम ने मूसा को नव रोशन

بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ

निशानियां दीं[210] तो बनी इसराईल से पूछो जब वोह[211] उन के पास आया तो उस से फ़िरऔ़न ने कहा ऐ मूसा मेरे ख़याल

يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَاۤ اَنْزَلَ هٰۤؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ

में तो तुम पर जादू हुवा[212] कहा यक़ीनन तू ख़ूब जानता है[213] कि इन्हें न उतारा मगर

203 : घिसटता **204 :** जैसे वोह दुन्या में ह़क़ के देखने बोलने और सुनने से अन्धे, गूंगे, बहरे बने रहे, ऐसे ही उठाए जाएंगे। **205 :** ऐसे अ़ज़ीम व वसीअ़ वोह **206 :** येह उस की क़ुदरत से कुछ अ़जीब नहीं **207 :** अ़ज़ाब की या मौत व बअ़्स की **208 :** बा वुजूद दलीले वाज़ेह़ और हुज्जत क़ाइम होने के **209 :** जिन की कुछ इन्तिहा नहीं **210 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : वोह नव निशानियां येह हैं : अ़सा, यदे बैज़ा, वोह उ़क़्दा जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की ज़बान मुबारक में था, फिर अल्लाह तआ़ला ने उस को ह़ल फ़रमाया और दरिया का फटना और उस में रस्ते बनना, तूफ़ान, टीड़ी (टिड्डी दल), घुन, मेंडक, ख़ून। इन में से छ[6] आख़िर का मुफ़स्सल बयान नवें पारे के छटे रुकूअ़ में गुज़र चुका। **211 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام। **212 :** या'नी مَعَاذَ اللّٰہ जादू के असर से तुम्हारी अ़क़्ल बजा (दुरुस्त) न रही या "मस्ह़ूर" साह़िर के मा'ना में है और मत़लब येह है कि येह अ़जाइब जो आप दिखलाते हैं येह जादू के करिश्मे हैं, इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने **213 :** ऐ फ़िरऔ़न मुआ़निद ! (दुश्मनी रखने वाले)।

www.dawateislami.net

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآىِٕرَ ۚ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾

आस्मानों और ज़मीन के मालिक ने दिल की आंखें खोलने वालियां[214] और मेरे गुमान में तो ऐ फ़िरऔन तू ज़रूर हलाक होने वाला है[215]

فَاَرَادَ اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِیْعًا ﴿۱۰۳﴾ وَّ

तो उस ने चाहा कि उन को[216] ज़मीन से निकाल दे तो हम ने उसे और उस के साथियों सब को डुबो दिया[217] और

قُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ

इस के बा'द हम ने बनी इसराईल से फ़रमाया उस ज़मीन में बसो[218] फिर जब आखि़रत का वा'दा

الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِیْفًا ﴿۱۰۴﴾ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَاۤ

आएगा[219] हम तुम सब को घालमेल ले आएंगे[220] और हम ने कुरआन को हक़ ही के साथ उतारा और हक़ ही के साथ उतरा[221] और

اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِیْرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ

وقف لازم

हम ने तुम्हें न भेजा मगर खु़शी और डर सुनाता और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के[222] उतारा कि तुम इसे लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो[223]

عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِیْلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ

और हम ने इसे ब तदरीज रह रह कर उतारा[224] तुम फ़रमाओ कि तुम लोग इस पर ईमान लाओ या न लाओ[225] बेशक वोह जिन्हें

اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿۱۰۷﴾

इस के उतरने से पहले इल्म मिला[226] जब उन पर पढ़ा जाता है ठोड़ी के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं

214 : कि इन आयात से मेरा सिद्क़ और मेरा ग़ैर मस्हूर (जादू किया हुवा न) होना और इन आयात का खु़दा की त़रफ़ से होना ज़ाहिर है। **215 :** येह ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ से फ़िरऔ़न के उस क़ौल का जवाब है कि उस ने आप को मस्हूर कहा था मगर उस का क़ौल किज़्ब व बात़िल था जिसे वोह खु़द भी जानता था मगर उस के इ़नाद ने उस से कहलाया और आप का इर्शादे ह़क़ व सह़ीह़। चुनान्चे वैसा ही वाक़ेअ़ हुवा। **216 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को और उन की क़ौम को मिस्र की **217 :** और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को और उन की क़ौम को हम ने सलामती अ़त़ा फ़रमाई। **218 :** या'नी ज़मीने मिस्र व शाम में। (خازن وقرطبی) **219 :** या'नी क़ियामत। **220 :** मौक़िफ़ (मैदाने) क़ियामत में फिर सअ़दा (सआ़दत मन्दों) और अश्क़िया (बद बख़्तों) को एक दूसरे से मुमताज़ कर देंगे। **221 :** शयात़ीन के ख़ल्त़ (मिलने) से मह़फ़ूज़ रहा और किसी तग़य्युर ने इस में राह न पाई। तिब्यान में है कि ह़क़ से मुराद सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारक है। **फ़ाएदा :** आयते शरीफ़ा का येह जुम्ला हर एक बीमारी के लिये अ़मले मुजर्रब है, मौज़ए़ मरज़ (मरज़ की जगह) पर हाथ रख कर पढ़ कर दम कर दिया जाए तो باذن اللہ बीमारी दूर हो जाती है। मुह़म्मद बिन सम्माक बीमार हुए तो उन के मुतवस्सिलीन (अ़क़ीदत मन्द) क़ारूरा (पेशाब की शीशी) ले कर एक नसरानी त़बीब के पास ब ग़रज़े इलाज गए, राह में एक साह़िब मिले, निहायत खु़शरू व खु़श लिबास (या'नी हश्शास बश्शास चेहरे और साफ़ सुथरे लिबास वाले), उन के जिस्म मुबारक से निहायत पाकीज़ा खु़श्बू आ रही थी, उन्हों ने फ़रमाया : कहां जाते हो ? उन लोगों ने कहा : इब्ने सम्माक का क़ारूरा दिखाने के लिये फ़ुलां त़बीब के पास जाते हैं। उन्हों ने फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللہ ! **अल्लाह** के वली के लिये खु़दा के दुश्मन से मदद चाहते हो ! क़ारूरा फेंको, वापस जाओ ! और उन से कहो कि मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर पढ़ो ''بِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ'' येह फ़रमा कर वोह बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए। उन साह़िबों ने वापस हो कर इब्ने सम्माक से वाक़िआ़ बयान किया। उन्हों ने मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर येह कलिमे पढ़े, फ़ौरन आराम हो गया और इब्ने सम्माक ने फ़रमाया कि वोह ह़ज़रते खि़ज़्र थे عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ السَّلَام। **222 :** तेईस साल के अ़र्से में **223 :** ताकि इस के मज़ामीन ब आसानी सुनने वालों के ज़ेह्न नशीन होते रहें। **224 :** ह़स्बे इक़्तिज़ाए मसालेह़ व ह़वादिस (या'नी मुख़्तलिफ़ मस्लह़तों और वाक़िआ़त की ज़रूरत के पेशे नज़र) **225 :** और अपने लिये ने'मते आखि़रत इख़्तियार करो या अ़ज़ाबे जहन्नम।

www.dawateislami.net

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّوْنَ

और कहते हैं पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वा'दा पूरा होना था[227] और ठोड़ी

لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ السجدة قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا

के बल गिरते हैं[228] रोते हुए और येह क़ुरआन उन के दिल का झुकना बढ़ाता है[229] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** कह कर पुकारो या

الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ

रह़मान कह कर जो कह कर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं[230] और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो

وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

न बिल्कुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो[231] और यूं कहो सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस

لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

ने अपने लिये बच्चा इख़्तियार न फ़रमाया[232] और बादशाही में कोई उस का शरीक नहीं[233] और कमज़ोरी से कोई

وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾ ع

उस का ह़िमायती नहीं[234] और उस की बड़ाई बोलने को तक्बीर कहो[235]

السجدة ٢

ع ١٢

اٰياتها ١١٠ ﴿١٨ سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ ٦٩﴾ رکوعاتها ١٢

सूरए कहफ़ मक्किय्या है, इस में 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं

226 : या'नी मोमिनीन अहले किताब जो रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की बि'सत से पहले इन्तिज़ार व जुस्तजू में थे, हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बि'सत के बा'द शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल और सलमान फ़ारसी और अबू ज़र वग़ैरहुम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم। **227 :** जो उस ने अपनी पहली किताबों में फ़रमाया था कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाएंगे। **228 :** अपने रब के हुज़ूर इज्ज़ो नियाज़ से नर्म दिली से **229 मस्अला :** क़ुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तह़ब है। तिरमिज़ी व नसाई की ह़दीस में है कि वोह शख़्स जहन्नम में न जाएगा जो ख़ौफ़े इलाही से रोए। **230 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि एक शब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने त़वील सज्दा किया और अपने सज्दे में "یا اللہ یا رحمٰن" फ़रमाते रहे। अबू जह्ल ने सुना तो कहने लगा कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) हमें तो कई मा'बूदों के पूजने से मन्अ़ करते हैं और अपने आप दो को पुकारते हैं **अल्लाह** को और रह़मान को (مَعَاذَ اللہ)। इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया **अल्लाह** और रह़मान दो नाम एक ही मा'बूदे बरह़क़ के हैं ख़्वाह किसी नाम से पुकारो। **231 :** या'नी मुतवस्सित़ आवाज़ से पढ़ो जिस से मुक़्तदी ब आसानी सुन लें। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा में जब अपने अस्ह़ाब की इमामत फ़रमाते तो क़िराअत बुलन्द आवाज़ से फ़रमाते। मुश्रिकीन सुनते तो क़ुरआने पाक को और उस के नाज़िल फ़रमाने वाले को और जिन पर नाज़िल हुवा उन सब को गालियां देते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **232 :** जैसा कि यहूदो नसारा का गुमान है। **233 :** जैसा कि मुश्रिकीन कहते हैं। **234 :** या'नी वोह कमज़ोर नहीं कि उस को किसी ह़िमायती और मददगार की ह़ाजत हो। **235 :** ह़दीस शरीफ़ में है : रोज़े क़ियामत जन्नत की त़रफ़ सब से पहले वोही लोग बुलाए जाएंगे जो हर ह़ाल में **अल्लाह** की ह़म्द करते हैं। एक और ह़दीस में है कि बेहतरीन दुआ़ "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" है और बेहतरीन ज़िक्र "لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللہ"। (ترمذی) मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक चार कलिमे बहुत प्यारे हैं "لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللہ، اَللہُ اَکْبَر، سُبْحَانَ اللہ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہ"। **फ़ाएदा :** इस आयत का नाम आयतुल इ़ज़्ज़ है। बनी अ़ब्दुल मुत्त़लिब के बच्चे जब बोलना शुरूअ़ करते थे तो उन को सब से पहले येही आयत "قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ" सिखाई जाती थी।

www.dawateislami.net